अंतरिक्ष उपयोग केंद्र
तथा
विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट
अहमदाबाद

वार्षिकी वर्ष 2013 अंक - 6

अभिव्यक्ति

हिंदी गृह पत्रिका

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र को वर्ष 2010-11 के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में कार्यालय को प्रदत्त शील्ड

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र को वर्ष 2010-11 के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में वरिष्ठ हिंदी अधिकारी को प्रदत्त शील्ड

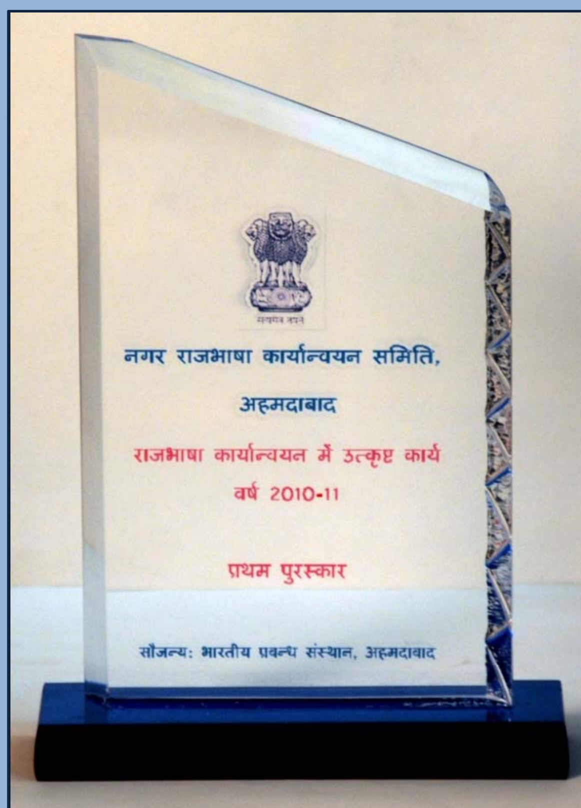

अभिव्यक्ति
हिंदी गृह पत्रिका

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र
तथा
विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट
अहमदाबाद

वार्षिकी
वर्षः 2013
अंकः 6

परम संरक्षक
श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संरक्षक
श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डेकू

मार्गदर्शन
श्री डी.बी.भट्ट, नियंत्रक, सैक एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

सलाहकार मंडल
श्री सी.एन.लाल, प्रधान-ईक्यूसीडी
डॉ.मनीष कुमार पंड्या, वैज्ञा./अभि.-एसएफ
श्री धर्मेश भट्ट, वैज्ञा./अभि.-एसएफ

प्रधान संपादक
श्री बी.आर.राजपूत
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

सह संपादक
श्रीमती नीलू एस.सेठ
हिंदी अधिकारी

प्रबंध संपादक
श्री सोनू जैन
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सहयोग
सुश्री रजनी सेमवाल
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, एवं
श्री जी.एल.त्रिवेदी
वरिष्ठ सहायक

मुद्रण
पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग

छायांकन
फोटोलेब-ईपीएसए-एटीडीजी-आरएसीएफ

अनुक्रमणिका

संपादकीय	2
संदेशः निदेशक, सैक	3
संदेशः निदेशक, डेकू	4
संदेशः नियंत्रक, सैक	5
क्यूं छोड़ दूँ? (कविता)	6
सैक/डेकू में राजभाषा कार्यान्वयन	7
उष्मा नली : एक परिचय	9
समय की समझ (कविता)	14
क्यों पड़ती हैं मकानों में दरारें	15
सृजन, आमंत्रण और नियंत्रण (कविता)	16
हमारे बच्चे भविष्य की धरोहर	17
छंद (कविता)	19
इंसान (कविता)	20
एहसास (कविता)	20
वृक्ष की आत्मकथा	21
क्या खोया, क्या पाया	22
माता की आज्ञा का पालन संतान का परम कर्तव्य	23
वह भयानक रात....	24
कहानी	26
गुस्सा अच्छे-भले आदमी को भी विवेकहीन.........	28
जवान	29
संघ की राजभाषा नीति से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदु	30
समय मानो थम सा गया.....	31
अंतर्मन (कविता)	32
एक पत्र भगवान को	33
एक प्रेरणा स्रोत (कविता)	34
सारथी (कविता)	35
गिल्लू गिलहरी (कविता)	37
भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियां: रिपोर्ट	38
हिंदी तकनीकी संगोष्ठीः रिपोर्ट	41
हिंदी माह-2012: रिपोर्ट	43

-***-

नोटः यह आवश्यक नहीं है कि संपादक मंडल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचारों और और उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से सहमत हो।

संपादकीय............

मानव समाज में भाषा का प्रश्न हमेशा महत्वपूर्ण रहा है। हम किसी अपरिचित व्यक्ति के मुख से निकले शब्दों से उसका परिचय प्राप्त कर लेते हैं, उसके रहन-सहन और व्यवहार का भी अनुमान लगा सकते हैं। संक्षेप में कहा जाए तो हमारी भाषा हमारी पहचान है, शायद इसीलिए भाषा का प्रश्न इतना संवेदनशील भी है। संविधान निर्माताओं ने हिंदी को राजभाषा के रूप में चुना, हिंदी का चुनाव शोषकों की भाषा - अंग्रेजी के विरुद्ध था, क्षेत्रीय भाषाओं के विरुद्ध नहीं। वस्तुतः हर भारतीय भाषा का चुनाव अंग्रेजी के विरुद्ध होना चाहिए था, किंतु आज हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं को एक-दूसरे का प्रतिस्पर्धी और विरोधी के रूप में प्रचारित किया जाता है, भाषी अस्मिता के नाम पर हम अपनी ही भाषाओं को एक-दूसरे के सामने खड़ा कर देते हैं।

सभी अंग्रेजी में ही अपना वर्तमान और भविष्य देखते हैं। यदि गहराई से विचार किया जाए तो देश के बिगड़े हुए भाषायी समीकरण, नई पीढ़ी को भाषायी कुपोषण का शिकार बना रहे हैं। जिसका घातक परिणाम आज देश की अधिकांश जनता भुगत रही है और भविष्य में भी हिंदी या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षित नयी पीढ़ी को भुगतना पड़ेगा। इस भाषा-समीकरण ने देश में शासक और शासित के बीच एक बड़ी खाई बना दी है, जिसका परिणाम भ्रष्टाचार और शोषण के रूप में हमारे सामने है। हम सबको मिलकर इस समस्या का समाधान खोजना होगा।

हिंदी भले ही हममें से सभी की मातृभाषा न हो, लेकिन घर के बाहर हमारा अधिकांश विचार विनिमय हिंदी के माध्यम से होता है। उपयोगिता की दृष्टि से विचार किया जाए तो हिंदी भाषा भारत के अधिकांश लोगों के मनोरंजन, व्यापार और अन्य आवश्यक गतिविधियों का अनिवार्य अंग है। औपचारिक शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान, प्रबंधन एवं कामकाज के परिदृश्य में हिंदी हमें कमजोर प्रतीत होती है, लेकिन ऐसा है नहीं। दुनियां के अधिकांश देश अपनी स्वदेशी भाषा के बल पर ही प्रगति के सोपान चढ़ रहे हैं।

इसरो का अंतरिक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट भाषा के संदर्भ में अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए विगत कई वर्षों से अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करते हुए, हिंदी के माध्यम से अपने कार्यक्रमों, अनुसंधान व विकास और अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों से देश को अवगत कराता रहा है। केंद्र द्वारा प्रति वर्ष गुजरात के पिछड़े जिलों के विद्यार्थियों के लिए 'भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियां' नामक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति रुचि जागृत करना है। 'अभिव्यक्ति' पत्रिका का प्रकाशन भी हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसकी लोकप्रियता को बढ़ाने की दिशा में एक लघु प्रयास है। हमारे इस प्रयास को विगत वर्षों में पाठकों ने पसंद किया और हमारा उत्साहवर्धन किया। आशा है कि 'अभिव्यक्ति' के इस अंक को विगत अंकों जैसा ही प्रतिसाद मिलेगा।

-संपादक

आ.सी.किरण कुमार,
निदेशक, सैक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संदेश

हिंदी भारत की भाषा ही नहीं, अपितु भारतवासियों के दिल की धड़कन है। संविधान ने भारतवासियों की इसी धड़कन को सुनकर हिंदी को संघ की राजभाषा बनने का गौरव प्रदान किया, संघ सरकार के अधीन कार्यरत सभी संस्थाओं को हिंदी के प्रचार प्रसार का उत्तरदायित्व सौंपा। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहा है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अहमदाबाद स्थित इस केंद्र के कर्मचारी अंतरिक्ष अनुप्रयोगों से जुड़े अनुसंधान एवं विकास कार्यों में व्यस्तता के बावजूद, जब भी उन्हें अवसर मिलता है तब वे हिंदी से जुड़ी गतिविधियों में भी पूरा उत्साह दिखाते हैं।

सैक/ डेकू की हिंदी वार्षिकी 'अभिव्यक्ति' केंद्र में हो रहीं राजभाषा संबंधी गतिविधियों की न केवल झलक देती है, अपितु सैक/ डेकू के कर्मचारियों के हिंदी में अभिव्यक्त विचारों को भी स्थान देती है। मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि इस पत्रिका के पिछले सभी अंकों को पाठकों का उत्साहवर्धक प्रतिसाद मिलता रहा है। आगे भी मैं आशा रखता हूँ कि नये रूप-रंग में प्रकाशित हो रहा 'अभिव्यक्ति' का यह अंक सभी को खूब पसंद आएगा।

मेरी ओर से पत्रिका की सफलता के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

आ सी किरण कुमार

(आ.सी.किरण कुमार)

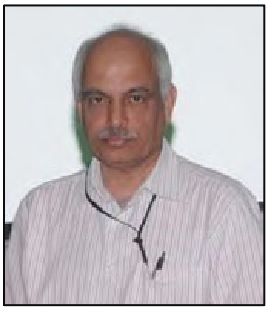

विलास पलसुले,
निदेशक, डेकू एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डेकू

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है, सैक/ डेकू अपनी हिंदी गृहपत्रिका "अभिव्यक्ति" के छठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन जैसी संस्था में कार्य करने वाले अधिकांश कार्मिकों के पास अपने मुख्य धारा के तकनीकी कार्यों में हिंदी के प्रयोग के अवसर प्रायः कम होते हैं और जो अवसर सृजित भी किए जाते हैं वे काफी कृत्रिम और सीमित होते हैं। "अभिव्यक्ति" के माध्यम से ऐसा मंच प्रदान किया जाता है, जहां सृजनशील मस्तिष्क दैनन्दिन कार्यालयीन कामकाज से अलग अपनी अभिव्यक्तियों को हिंदी भाषा के माध्यम से मूर्तरूप प्रदान कर सकते हैं।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और भाषा ही वह कारक है जो प्राणी जगत में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ बनाती है। अनौपचारिक अभिव्यक्तियों की भाषा हमारी प्राकृतिक भाषा होती है। जिन शब्दों के माध्यम से मन विचारों को बुनता है और जिन वाक्यों में सर्वाधिक प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करता है, वे शब्द और वाक्य हमारी निज भाषा/ मातृ भाषा के ही हो सकते हैं। ज्ञान-विज्ञान और विकास की भाषा कुछ भी हो लेकिन किसी भी व्यक्ति के लिए उसकी निज भाषा से अधिक कार्यकारी नहीं हो सकती है।

"अभिव्यक्ति" के माध्यम से हम संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में तो अपना योगदान देते ही हैं, साथ ही अपने सृजनशील स्वभाव को तुष्टि प्रदान करते हुए अपने विचारों के माध्यम से विशाल जनमानस से जुड़ते हैं।

मुझे आशा है कि पत्रिका अपने पिछले अंकों की तरह इस बार भी सफलता का परचम लहराएगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(विलास पलसुले)

डी.बी.भट्ट
नियंत्रक, एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संदेश

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट राजभाषा हिंदी से जुड़ी हर गतिविधि को बड़ी गंभीरता और निष्ठा के साथ संचालित करता रहा है। इसीलिए विगत वर्षों में संसदीय राजभाषा समिति ने अपने निरीक्षणों के दौरान केंद्र में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन की सराहना की है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अहमदाबाद भी केंद्र को श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए पुरस्कृत करती रही है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए वैसे तो केंद्र में वर्ष भर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं और कर्मचारियों के उत्साहवर्धन के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति पर अमल किया जाता है, लेकिन पत्रिका के माध्यम से सभी को अपने विचार हिंदी में व्यक्त करने के लिए आमंत्रित करना और गरिमापूर्ण ढ़ंग से उन्हें पत्रिका में प्रकाशित करना राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक विशिष्ट कार्य है।

हिंदी वार्षिकी 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन लगभग विगत छह वर्षों से नियमित रूप से हो रहा है। पाठकों ने हमेशा इस पत्रिका की सराहना की है। मुझे खुशी होती है जब तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में संलग्न रहने वाले इस केंद्र के कर्मचारी हिंदी में विविध लेख, कहानियां और कविताएं प्रस्तुत करते हैं। साहित्यिक सृजनशीलता मस्तिष्क को सीमाओं के परे सोचने की शक्ति से भर देती है। निश्चित रूप से इस प्रकार की सृजनात्मकता उन्हें उनके मुख्यधारा के कार्यों के लिए स्फूर्ति प्रदान करती होगी।

मैं पत्रिका की सफलता के लिए हृदय से शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हिंद।

डी.बी.भट्ट

(डी.बी.भट्ट)

'क्यूं छोड़ दूँ'

दीपक यादव, वैज्ञा./अभि

कभी मेरा एक पुस्तैनी भिखारी हुआ करता था,
सौगात में मैं रुपये दस-बीस
अक्सर दिया करता था।
जाने अनजाने नज़रें अब भी
उससे चार हुआ करती हैं,
लेकिन देने के नाम पर
अब रुपया भी बड़ी मुश्किल से निकलता है।

उसने एक बार बोला भी,
दिनों दिन मेरा स्टैंडर्ड गिर रहा है कि आपका?
मैंने बोला-
पहले मैं कंवारा था, अब सैटिल्ड हूँ,
एक बीबी है मेरी, एक बेटी है मेरी।
जैसे-तैसे अपना परिवार चला रहा हूँ,
बेटी के लिए दहेज जुटा रहा हूँ।

अच्छा, मेरे पैसों से अपना परिवार चला रहे हो,
दहेज जुटा रहे हो,
पर उसका क्या जो मेरा स्टैंडर्ड गिरा रहे हो?

मैंने बोला- देखो,
हमारे चारों तरफ कितना बदलाव आ गया है
क्या तुम्हें कुछ नजर नहीं आ रहा है?
पहले टेलिफोन का बिल ज्यादा लगता था,
अब आटे-दाल का भाव भारी पड़ने लगा है।

पहले आदरणीय लोग बीपीएल की बातें करते थे,
अब आईपीएल से जुड़ने को आतुर दिखते हैं।
सीबीआई यदि कभी करे पूछताछ,
कुछ याद नहीं ये कहते हैं,
सिविल में एडमिट रहते हैं।

पहले चार-छः भाई भी एक साथ एक घर में
रहा करते थे,
अब एक बेटा-बहू, माँ-बाप बीच दो चूल्हा
जला करते हैं।

पहले नम्र प्रणाम का चलन था,
चरण स्पर्श, गले मिला करते थे।
अब फोन कर के आना कह,
हम पीछा छुड़ाया करते हैं।

और कुछ ऐसी हवा चली है कि-
साली का बर्थ डे याद रहा,
माँ की दवाई भूल गए,
बीबी से वायदा याद रहा,
बापू की रज़ाई भूल गए।

मेरी फ़िज़ूल की बातें सुन,
वह पूरे फार्म में आ गया,
पुश्तैनी भिखारी होने का तमग़ा निकाल फैक दिया।
और मुझे नसीहत देने लगा,
अपनी लाइनों में बदला लेने लगा -
ज़लज़लों से डर कर क्या घर बनाना छोड़ दूँ?
हादसों के डर से क्या सड़क पर निकलना छोड़ दूँ?

इश्क है, सिर पर पत्थर तो पड़ेंगे ही,
बिछड़ जाने के डर से क्या दिल लगाना छोड़ दूँ?
सफेदपोश है, कुछ कालिख तो रहेगी आसपास,
उनकी दग़ा की डर से
क्या उम्मीद का दामन छोड़ दूँ?

दरिया है तो तूफां इसकी फितरत में है,
डूब जाने के डर से क्या इसमें उतरना छोड़ दूँ?
ज़िंदगी है, उतार-चढ़ाव तो आने ही हैं,
गिरने के डर क्या बुलंदियों को छूना छोड़ दूँ?

सफलता है, ये तो करेगी आँख मिचौली,
हार जाने के डर से क्या भाग लेना छोड़ दूँ?
कुछ बड़ा सोचने को,
ख्याली पुलाव कहते हैं लोग,
टूट जाने के डर से क्या सपने देखना छोड़ दूँ?
***

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट में राजभाषा कार्यान्वयन

सितंबर 2011 से दिसंबर 2012 तक सैक/ डेकू में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित गतिविधियों का सुचारू ढ़ंग से संचालन किया गया; जिनका संक्षिप्त ब्योरा यहाँ प्रस्तुत हैः-

<u>उपलब्धियां</u>

- नराकास, अहमदाबाद द्वारा सैक/ इसरो को सर्वश्रेष्ठ हिंदी कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2010-11 के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू ने 28 मार्च 2012 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में आयकर आयुक्त के कर कमलों से शील्ड एवं प्रमाणपत्र ग्रहण किया। इस अवसर पर वरि.हिंदी अधिकारी, सैक को भी शील्ड एवं प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

<u>हिंदी संगोष्ठी</u>

- सेमी कंडक्टर लेबोरेटरी, चंडीगढ़ में 27 अप्रैल 2012 को संपन्न अंतर केंद्र हिंदी तकनीकी संगोष्ठी में सैक, अहमदाबाद के दो आलेख प्रस्तुत किए गए, जिनमें श्री कमलेश कुमार बराया, वैज्ञा/अभि-एसई को श्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।
- 27 जून 2012 को श्री डी.बी. भट्ट, नियंत्रक, सैक की अध्यक्षता में "भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में स्वदेशी उद्योगों एवं संस्थाओं का योगदान" विषय पर एक दिवसीय हिन्दी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में डॉ.रत्नेश्वर झा, डीन, प्लाजमा अनुसंधान संस्थान (आईपीआर), गाँधीनगर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू ने की। मुख्य अतिथि के कर-कमलों से लेखसंग्रह का विमोचन किया गया। लेखसंग्रह की सीडी का विमोचन निदेशक, डेकू द्वारा किया गया। संगोष्ठी में कुल 30 लेख प्रस्तुत किये गए। श्रेष्ठ प्रस्तुतियों के लिए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कारों की घोषणा की गई।
- बनासकांठा जिले के विद्यार्थियों के लिए पालनपुर शहर में 30 जनवरी 2012 को “भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियाँ” नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान छात्रों के लिए अंतरिक्ष प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसका 3000 से भी अधिक विद्यार्थियों ने लाभ लिया।

<u>हिंदी अभिमुखीकरण कार्यक्रम</u>

- अगस्त 23-24, 2012 को आईआईएसटी, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम में इस केंद्र की ओर से हिंदी अनुभाग के तीन स्टाफ सदस्यों द्वारा लेख प्रस्तुत किए गए। इसके अतिरिक्त श्री सी.एन.लाल, प्रधान, ईक्यूसीडी, सैक ने सैक के क्रियाकलापों पर हिंदी में आमंत्रित व्याख्यान दिया।

<u>हिंदी माह</u>

- सैक में सितंबर 2012 के दौरान हिंदी माह का आयोजन किया गया। 3 सितंबर 2012 को श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू ने हिंदी माह के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। समारोह की मुख्य अतिथि के रूप में डॉ रंजना अरगड़े, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, गुजरात युनिवर्सिटी आमंत्रित थीं। उद्घाटन समारोह के पश्चात् निदेशक, डेकू ने सैक पुस्तकालय में इस अवसर पर आयोजित हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।
- हिंदी माह के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे कि हिंदी निबंध, हिंदी स्टेनोग्राफी, हिंदी टाइपिंग, हिंदी श्रुतलेखन, हिंदी टिप्पण व आलेखन, हिंदी आशुभाषण, हिंदी सरल लेखन, हिंदी प्रश्न मंच, हिंदी अनुवाद, हिंदी शब्दज्ञान, हिंदी वर्ग पहेली, हिंदी कहानी लेखन, हिंदी काव्यपाठ तथा स्टाफ के परिवार के सदस्यों के लिए भी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें विवाहितियों के लिए अंताक्षरी एवं बच्चों के लिए सुलेखन, श्रुतलेखन, आशुभाषण एवं वाद विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी माह की विविध प्रतियोगिताओं में लगभग 1200 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। हिंदी माह की विस्तृत रिपोर्ट “हिंदी माह - 2012” शीर्षक से प्रकाशित है।
- हिंदी माह के अंतर्गत ही दिनांक 21 सितम्बर, 2012 को सैक व्याख्यान माला के अंतर्गत “राष्ट्र निर्माण में डॉ.बी.आर.अंबेडकर साहब का योगदान” विषय पर श्री जागीश सोमकुंवर, सुपरिटेंडेंट अभियंता, ओएनजीसी के व्याख्यान का आयोजन किया गया।

<u>विश्व हिंदी दिवस</u>

- 10 जनवरी, 2012 को केंद्र में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। विभिन्न विषयों पर हिंदी एवं हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

राभाकास बैठक

- वर्ष के दौरान राभाकास बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं। बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई एवं निर्णय लिए गए तथा लिए गए निर्णयों पर कार्रवाई रिपोर्ट की भी समीक्षा की गई।

राजभाषा कार्यशाला

- रिपोर्ट अवधि के दौरान नियमित रूप से राजभाषा कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिनमें विभिन्न वर्गों के अधिकारियों/ कर्मचारियों को हिंदी नीति नियमों से अवगत कराया गया एवं कंप्यूटर पर हिंदी शब्द संसाधन का ज्ञान कराया गया।

वार्षिक हिंदी प्रोत्साहन योजना

- अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट में वर्ष 2011-2012 के लिए लागू वार्षिक हिंदी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत निम्नलिखित कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गयाः

  प्रथम पुरस्कार : श्रीमती जसपाल कौर भाटिया तथा सुश्री चंपा बी.ठक्कर

  द्वितीय पुरस्कार : श्री धर्मेन्द्र एम.माहितकर, श्री बीनु देवपालन नायर ,श्री वेद प्रकाश, श्री वी.के. जैन, श्री आर.वी. शास्त्री, श्री विनोद चौधरी, श्री अपूर्व बी.प्रजापति तथा श्री किशोर डी.वाघेला

  तृतीय पुरस्कार : डॉ. पुनीत स्वरूप ,श्री कमलेश कुमार बराया, श्री जैमिन कुमार डी. शाह, श्रीमती सरला एन.चावला तथा श्री निमेश मनोजकुमार के.

- उक्त योजना वाहन चालकों, कैंटीन स्टाफ तथा एटेंडेंट वर्ग के कर्मचारियों के लिए भी लागू की गई, जिसका परिणाम इस प्रकार रहाः-

  प्रथम पुरस्कार : श्री राम सेवक, दिल्ली भू-केंद्र तथा श्री दवे निकुंज देवेन्द्रभाई

  द्वितीय पुरस्कार : श्री आर के राजपूत, वाहन चालक, दिल्ली भू-केंद्र

तकनीकी प्रभागों के लिए हिंदी प्रोत्साहन योजना

- अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट, अहमदाबाद में तकनीकी कार्यों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विशेष हिंदी प्रोत्साहन योजना चलाई जाती है। वर्ष 2010-11 के लिए लागू इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित तकनीकी प्रभागों को डॉ.रं.रा.नवलगुंद, निदेशक, सैक ने 26 जनवरी 2012 को गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान वैजंयती (शील्ड) प्रदान कीः-

प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	प्रोत्साहन पुरस्कार
संरचना एवं तापीय विश्लेषण प्रभाग	पुस्तकालय प्रभाग	ईएफपी प्रभाग	एओसी प्रभाग

हिंदी प्रशिक्षण

- हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत 11/07/2012 को आयकर कार्यालय, अहमदाबाद में संपन्न हिन्दी टंकण परीक्षा में सैक से 16 कर्मचारियों ने भाग लिया।

अनुवाद

- केंद्र की मासिक प्रगति रिपोर्ट (एमपीआर) का समयबद्ध हिंदी अनुवाद अग्रिम कार्रवाई हेतु संबंधित प्रभाग को उपलब्ध कराया गया।
- अंतरिक्ष विभाग द्वारा प्रेषित अंतरिक्ष विभाग एवं एनईसैक की वार्षिक रिपोर्ट के कुछ अध्यायों का अनुवाद हिंदी अनुभाग, सैक द्वारा किया गया।
- "आरआईसैट-समकक्षों में प्रथम", "चेजिंग द एक्लिप्स-सोलर एक्लिप्स", "वन्स इन ए ब्लू मून-सोलर एक्लिप्स", "अद्वितीय-रोमांसिंग द क्लाउड्स" एवं "चाँद हमारे आगोश में" आदि डेकू के 05 कार्यक्रमों का हिंदी संस्करण भी तैयार किया गया।
- "कल्पना मोनोग्राफ", आरआईसैट से संबंधित विभिन्न आलेखों को द्विभाषी में तैयार किया गया।

प्रकाशन

- फरवरी 2012 में सैक पुस्तकालय में उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों की अद्यतन ग्रंथ सूची तैयार की गई तथा मार्च 2012 में केंद्र की गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के पाँचवे अंक का प्रकाशन किया गया।

वेबसाइट

- सैक की आधिकारिक वेबसाइट का नया संस्करण 'व्योम' द्विभाषी रूप में इंटरनेट पर विमोचित किया गया तथा इसके अंग्रेजी अपडेट नियमित रूप से हिंदी रूपांतरण के साथ अपलोड किए जाते हैं।
- सैक पुस्तकालय की वेबसाइट भी हिंदी में उपलब्ध है।

****

ऊष्मा नली (Heat Pipe): एक परिचय

लेखक ने यांत्रिकी अभियांत्रिकी में स्नातक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मुंबई से तापीय एवं तरल अभियांत्रिकी में स्नातकोत्तर एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से इटालियन भाषा में प्रवीणता का डिप्लोमा की शिक्षा ग्रहण की है। वर्तमान में अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र के संरचना एवं तापीय विश्लेषण प्रभाग में वैज्ञानिक / अभियंता - एसई के पद पर कार्यरत है। केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों पर आपके लेख दो बार आचार्य सत्येन पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं।

कमलेश कुमार बराया

प्रस्तावना

ऊष्मा, ऊर्जा का एक रूप है जो अधिक तापमान से कम तापमान की ओर स्वतः स्थानांतरित हो जाती है। जब हम सामान्य लंबाई के लकड़ी के डंडे के एक सिरे को हाथ में पकड़कर, दूसरे सिरे को आग में रखते हैं, तो हम महसूस करते हैं कि हाथ में पकड़ा हुआ सिरा सामान्य तापमान पर ही रहता है। लेकिन ऐसा ही प्रयोग हम उसी आकार की इस्पात की बनी छड़ से करते हैं तो हम पाते हैं कि इस्पात की छड़ का हाथ में पकड़े हुए सिरे का तापमान सामान्य से थोड़ा अधिक होता है। अब हम इस्पात के बजाय समान आकार के तांबे की छड़ लेते हैं, तांबे की छड़ का हाथ में पकड़ा हुआ सिरा इतना अधिक गर्म हो जाता है कि उसे थोड़े समय बाद हाथ से पकड़ना ही संभव नहीं होता है। हमनें देखा कि हमें लकड़ी, इस्पात और तांबे के साथ तापमान के भिन्न अनुभव होते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि तीनों पदार्थो के ऊष्मीय गुणधर्म भिन्न है। लकड़ी ऊष्मा की कुचालक है, जबकि इस्पात उष्मा का चालक है और तांबा ऊष्मा के श्रेष्ठ चालकों में से एक है। लकड़ी, उसके दोनों सिरों के तापमानों में काफी अंतर के बावजूद भी ऊष्मा को एक सिरे से दूसरे सिरे तक स्थानांतरित करने में सक्षम नहीं है, जबकि इस्पात और तांबे की छड़ ऊष्मा को एक सिरे से दूसरे सिरे तक अपने-अपने गुणधर्मों के अनुसार भिन्न दरों से ऊष्मा को स्थानांतरित कर देते हैं। तांबें में ऊष्मा स्थानांतरण करने का गुणधर्म इस्पात से बेहतर होने के कारण तांबा तेजी से ऊष्मा का स्थानांतरण करता है। पदार्थों मे उष्मा स्थानांतरण के इस गुणधर्म को ऊष्मीय चालकता कहा जाता है। ऊष्मा स्थानांतरण के लिए हमें श्रेष्ठ ऊष्मीय चालकता वाले पदार्थों की आवश्यकता होती है। कई प्रयुक्तियों एवं उपकरणों के प्रचालन के लिए हमें तांबे से भी कई गुना बेहतर ऊष्मीय चालकों की आवश्यकता होती है, तांबे जैसी सामान्य धातु हमारी आवश्कताओं के लिए पर्याप्त नही होते हैं। ऐसी परिस्थितियों मे ऊष्मा नली को एक दक्ष विकल्प के रूप में उपयोग कर सकते हैं। ऊष्मा नली एक ऐसी प्रभावी प्रयुक्ति है जो ऊष्मा को लंबी दूरियों पर भी बहुत अधिक दक्षता के साथ उष्मा के स्त्रोत एवं सिंक के तापमानों में बहुत कम अंतर रखते हुए तेजी से स्थानांतरित कर देती है। दूसरे शब्दों मे हम कह सकते हैं कि ऊष्मा नली एक बहुत अधिक ऊष्मीय चालकता वाली प्रयुक्ति है, जो ऊष्मा स्थानांतरण के साथ लगभग समतापीय परिस्थितियां उत्पन्न कर देती है। ऊष्मा नली की ऊष्मीय चालकता तांबे जैसे श्रेष्ठ सुचालक से भी कई गुना अधिक होती है। ऊष्मा नली की संरचना सरल होने के साथ-साथ इसके प्रचालन के लिए कोई बाह्य शक्ति की आवश्यकता नहीं होती है। उष्मा स्थानांतरण के पारंपरिक तरीकों की तुलना में उष्मा नली के उपयोग का लाभ यह है कि बहुत अधिक मात्रा की ऊष्मा को भी लंबी दूरियों तक अपेक्षाकृत छोटे अनुप्रस्थ काट वाले क्षेत्र के जरिए बिना कोई अतिरिक्त शक्ति निवेश से दक्षतापूर्ण स्थानांतरित कर दिया जाता है। ऊष्मा नली धातु की एक बंद नली होती है जिसकी आंतरिक सतह पर केशिका बत्ती के रूप में अक्षीय दिशा में बारीक खांचें बने होते हैं या धातु अथवा कपड़े की जाली का भी केशिका बत्ती के रूप में उपयोग होता है। केशिका बत्ती में एक उपर्युक्त द्रव भरा होता है, यह नली पूरी तरह से सील बंद एवं वायुरहित होती है। ऊष्मा नली में तेजी से ऊष्मा स्थानांतरण मुख्य रूप से ऊष्मा के चालन, प्रचालन द्रव की प्रावस्था परिवर्तन, तरल प्रवाह एवं केशिकत्व बलों की संयुक्त क्रियाओं के कारण संभव होता है।

ऊष्मा नली का इतिहास

ऊष्मा नली का पूर्ववर्ती उपकरण ऊष्मीय साइफन है, जिसे जेकब पर्किन्स ने 1836 में पर्किन्स नली के नाम से पेटेन्ट करवाया था। ऊष्मीय साइफन एक तरह की गुरूत्व आधारित ऊष्मा नली है। धातु की एक नली में निर्वात उत्पन्न करने के बाद थोड़ी मात्रा में द्रव की मात्रा भर के उसे सील बंद कर दिया जाता है। ऊष्मीय साइफन के प्रचालन के लिए साइफन को गुरूत्व की दिशा में इस प्रकार रखना होता है कि उसका गर्म सिरा नीचे रहे। नली के नीचे के सिरे को जब ऊष्मा के स्त्रोत के संपर्क में रखा जाता है तो उसमें उपस्थित द्रव प्रावस्था परिवर्तन की गुप्त ऊष्मा अवशोषित करके वाष्प में बदल कर वाष्प के रूप में नली के उपरी सिरे पर चली जाता है, वहाँ अधिक दाब और कम तापमान के कारण वाष्प, संघनन की प्रक्रिया द्वारा द्रव में परिवर्तित हो जाती है, यह द्रव गुरूत्व के प्रभाव के कारण वापस नीचे के सिरे पर आ जाता है, जो ऊष्मा के स्त्रोत के संपर्क में है। इस तरह साइफन द्वारा नली के नीचे के सिरे से उपरी सिरे पर ऊष्मा का स्थानांतरण होता रहता है। ऊष्मीय साइफन में ऊष्मा स्थानांतरण की प्रक्रिया उसमें उपस्थित द्रव के प्रावस्था परिवर्तन के कारण संभव

होती है। ऊष्मा नली की कल्पना सर्वप्रथम जनरल मोटर्स के गॉगलर ने 1944 में की थी। गॉगलर उस समय प्रशीतन की समस्या पर काम कर रहे थे। उन्होंने एक ऐसी प्रयुक्ति की कल्पना की थी जिसमें द्रव के वाष्पीकरण का स्थान, संघनन वाले स्थान से ऊंचाई पर स्थित होगा। उनकी प्रयुक्ति एक धातु की नली की बनी हुई थी, जिसके दोनो सिरे बंद थे। इस नली में द्रव एक स्थान पर ऊष्मा अवशोषित करके वाष्प में परिवर्तित हो जाता था। वाष्प नीचे की ओर प्रवाहित होकर वापस द्रव में संघनित हो जाता था। द्रव को वापस ऊंचाई के स्थान पर लाने के लिए गॉगलर ने सिंटरित लोहे की बत्ती वाली केशिकत्व संरचना के उपयोग का सुझाव दिया। 1962 में ग्रोवर ने इस प्रयुक्ति के विचार को अंतरिक्ष अभियानों में उपयोग के लिए पुनर्जीवित किया। ग्रोवर ने इस तरह की प्रयुक्ति के कई प्रोटोटाइप निर्माण किए और उन्होंने 1966 में अमरीकी परमाणु शक्ति आयोग की ओर से पेटेन्ट के लिए आवेदन किया। ग्रोवर ने इस प्रयुक्ति का नाम ऊष्मा नली रखा जो लगभग उसी तरह की थी जैसी कि गॉगलर ने अभिकल्पना की थी। ग्रोवर ने ऊष्मा नली में सोडियम, लीथियम एवं सिल्वर को कार्यकारी या प्रचालन द्रव तथा जाली की बत्ती को केशिकत्व संरचना के रूप में उपयोग किया। 1965 में कोटर ने ऊष्मा नली के प्रारंभिक सिद्धांतों को प्रकाशित करके इसे एक विश्वसनीय ऊष्मीय प्रयुक्ति के रूप में स्थापित किया। उसके बाद विभिन्न तरह की ऊष्मा नलियों पर अनुसंधान का काम तेजी से शुरू हुआ। ऊष्मा नली सूक्ष्म गुरूत्व के क्षेत्र में भी केशिकत्व बलों की प्रक्रिया के द्वारा बिना कोई बाहरी शक्ति के भी आसानी से काम कर सकती है, इसलिए प्रारंभ में इसका अंतरिक्ष अभियानों के लिए विकास किया गया। लेकिन शीघ्र ही विकसित देशों ने ऊर्जा संरक्षण एवं अभिकल्पनाओं की दक्षता बढ़ाने के लिए ऊष्मा नली के महत्व को पहचान लिया। आज सभी विकसित देशों एवं कई विकासशील देशों जैसे भारत में इसके अनुसंधान, विकास एवं व्यवसायीकरण पर तेजी से काम हो रहा है।

ऊष्मा नली की कार्य प्रणाली

ऊष्मा नली सामान्यत: एलमिनियम या अन्य धातु की बनी हुई एक नली होती है जिसके दोनों सिरें सील बंद होते हैं तथा इसकी आन्तरिक सतह केशिकत्व बत्ती (capillary wick) से भरी होती है। ऊष्मा नली की आन्तरिक सतह पर बहुत बारीक अक्षीय खाचों वाली केशिकत्व संरचना बहिर्वेधन विधि (extrusion) द्वारा बनाई जाती है। चित्र-1 में एक ऊष्मा नली का अनुप्रस्थ काट दिखाया गया है, जिसमें केशिकत्व बत्ती अक्षीय खाचों के रुप में बनाई गई है। केशिकत्व बत्ती के रुप में धातु या कपड़े की छननी का उपयोग भी किया जाता है। इस नली में थोड़ी मात्रा में प्रचालन द्रव जैसे अमोनिया, पानी इत्यादि भरा होता है, तथा यह द्रव अपनी वाष्प के साथ साम्य अवस्था में होता है।

ऊष्मा नली की लम्बाई को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा जा सकता है, चित्र - 2 में तीनों भागों को दर्शाया गया है।

1 वाष्पक भाग (Evaporator)   2 स्थिरोष्म भाग (adiabatic section)

3 संघनित्र भाग (condenser)

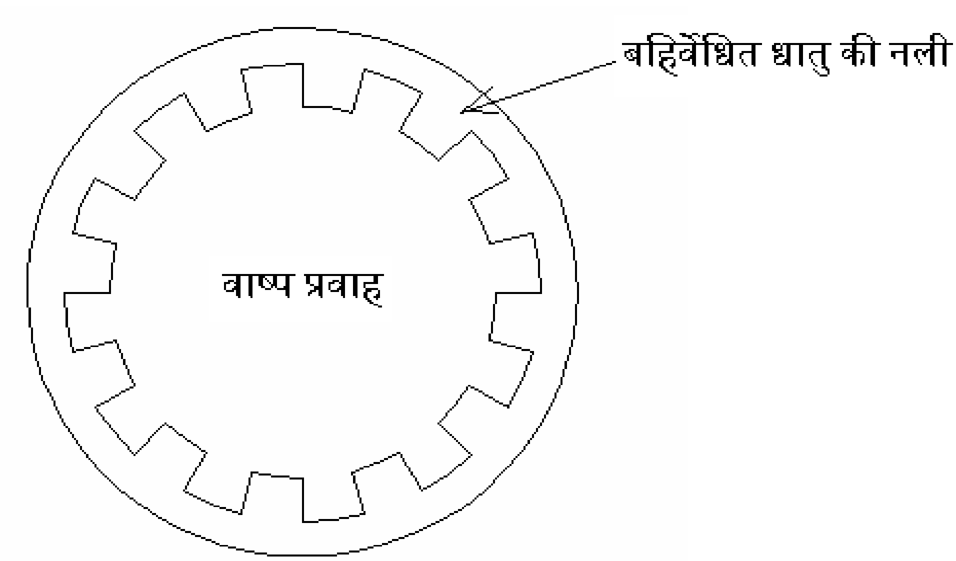

चित्र सं.1 अक्षीय खांचों वाली ऊष्मा नली

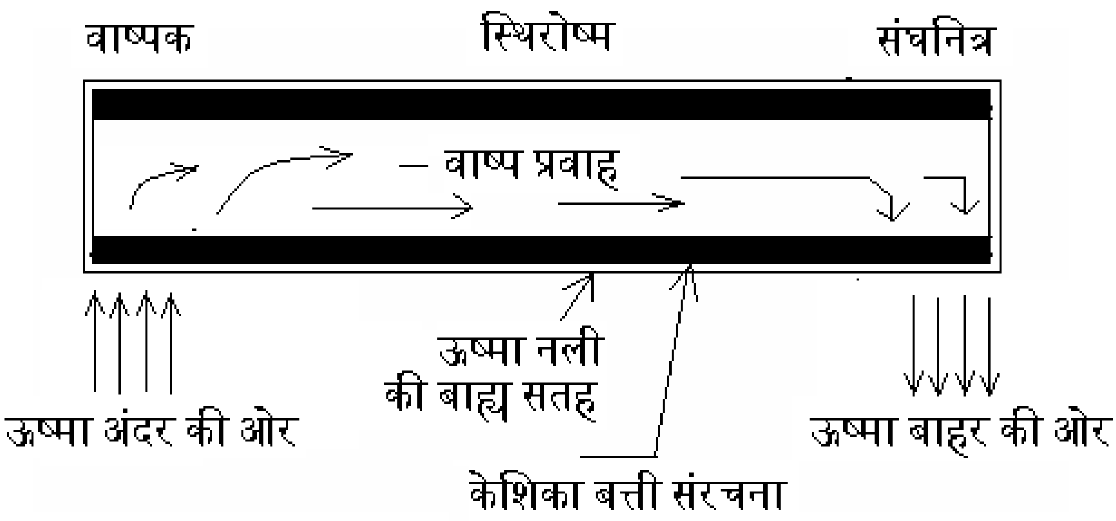

चित्र सं.2 ऊष्मा नली की कार्य प्रणाली का आरेखन

जब किसी इलेक्ट्रॉनिक घटक के ताप नियंत्रण के लिए ऊष्मा नली का उपयोग किया जाता है, तो ऊष्मा उत्पन्न करने वाले घटकों की सतह का वाष्पक भाग की बाहरी सतह से ऊष्मीय सम्पर्क कराया जाता है। ऊष्मा स्त्रोत से उत्पन्न ऊष्मा, वाष्पक भाग की दीवारों तथा केशिकत्व बत्ती संरचना से संचालित होती हुई प्रचालन द्रव तक पहुँचकर उसे वाष्पित करती है। वाष्प बनने के कारण वाष्पक में वाष्प का दबाब बढ़ता है, इस दबाब के कारण वाष्प स्थिरोष्म भाग से गुजरती हुई संघनित्र भाग में पहुँच जाती है, संघनित्र भाग की सतह कम तापमान पर होती है, इस कारण से वाष्प अपनी गुप्त ऊष्मा, ऊष्मा अभिगम की ओर मुक्त करते हुए द्रव में संघनित हो जाती है। वाष्पक भाग में वाष्पीकरण के कारण एक द्रव-वाष्प अंतरापृष्ठ (liquid vapor interface) बन जाता है, तथा द्रव-वाष्प अंतरापृष्ठ पर सतह-तनाव के कारण नवचन्द्रक (Meniscus) बन जाता है। वाष्पक भाग में द्रव का तापमान, ऊष्मा के आगमन के कारण संघनित्र के द्रव के तापमान से अधिक होता है। वाष्पक में वाष्पीकरण के कारण द्रव की मात्रा कम हो जाती है इस कारण से नवचन्द्रक अवनत (depress) हो जाता है। द्रव वाष्प अंतरापृष्ठ पर नवचन्द्रकों द्वारा उत्पन्न केशिकीय दबाव के कारण कार्यकारी द्रव को पुनः संघनित्र क्षेत्र से वाष्पक क्षेत्र की ओर पंप कर दिया जाता है। इस तरह ऊष्मा नली प्रचालन द्रव के वाष्पीकरण की गुप्त ऊष्मा को निरंतर वाष्पक क्षेत्र से संघनित्र क्षेत्र की ओर स्थानांतरित करती रहती है। यह प्रक्रम जब तक चलता रहता है तब तक संघनित द्रव को वाष्पक की ओर पंप करने के लिए पर्याप्त केशिकीय दाब बना रहता है।

वाष्पक में स्थानीय वाष्पीय दाब भी अधिक हो जाता है क्योंकि इसे अधिक तापमान वाले द्रव के साथ संतृप्त अवस्था में रहना पड़ता है। वाष्पक में वाष्पीकरण के कारण द्रव वाष्प अंतरापृष्ठ पर नवचन्द्रक की वक्रता, संघनित्र भाग के नवचन्द्रक की वक्रता से अधिक होती है। वाष्पक और संघनित्र भागों के द्रव-वाष्प अंतरापृष्ठों पर नवचन्द्रकों की वक्रता में अन्तर के कारण अक्षीय खाचों में एकत्रित हुए द्रव पर ऊष्मा नली की लंबाई के समानांतर दिशा में केशिकत्व दबाब में परिवर्तन होता है और केशिकत्व खांचों में उपस्थित द्रव में दाबीय प्रवणता का निर्माण हो जाता है। द्रव में उपस्थित दाबीय प्रवणता प्रचालन द्रव को संघनित्र से वाष्पक भाग तक केशिकत्व अक्षीय खाचों में खींचने के लिए काफी होती है। यह द्रव वाष्पक बत्ती मे वाष्पित हुए द्रव की आपूर्ति करता है। इस तरह वाष्प और द्रव प्रवाह का चक्र चलता रहता है। अधिकतर प्रचालन द्रवों की वाष्पीकरण की गुप्त ऊष्मा अधिक होती है इसलिए बहुत अधिक ऊष्मा स्थानांतरण के लिए भी बहुत कम मात्रा में कार्यकारी द्रव की आवश्यकता होती है। ऊष्मानली के परिचालन की प्रक्रिया का प्रेरक बल वाष्पक और संघनित्र की बाहरी सतहों के तापमानों में अन्तर है जो कि बहुत कम होता है, इस प्रकार ऊष्मा नली लगभग समतापीय अवस्था में परिचालन करती है। ऊष्मा नली के प्रचालन के लिए यह आवश्यक है कि अधिकतम केशिकीय दबाव, ऊष्मा नली में कुल दबावों के पतन से अधिक होना चाहिए। गणितीय रूप में इसे निम्न प्रकार से लिख सकते हैः-

$$(\Delta P_c)_{max} \geqslant \Delta P_l + \Delta P_v + \Delta P_g \quad (1)$$

कुल दबाव के तीन मुख्य घटक है

ΔP_l द्रव को संघनित्र से वाष्पक तक लौटाने के लिए दाब पतन

ΔP_v वाष्प का वाष्पक से संघनित्र तक प्रवाह के दौरान दाब पतन

ΔP_g गुरूत्व के कारण दबाव जो कि शून्य, धनात्मक या ऋणात्मक हो सकता है

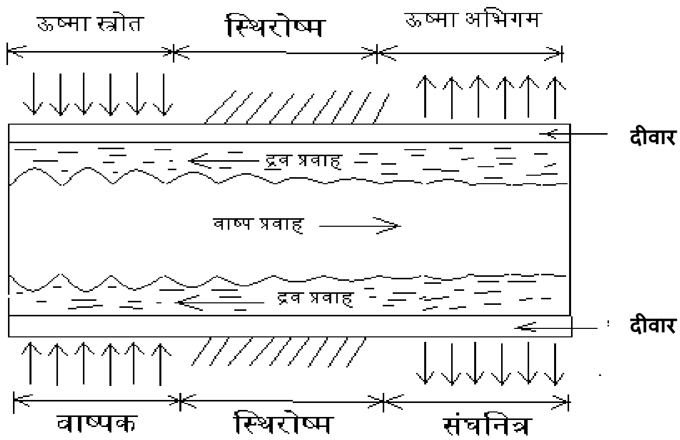

(अ) ऊष्मा नली में द्रव वाष्प अंतरापृष्ठ

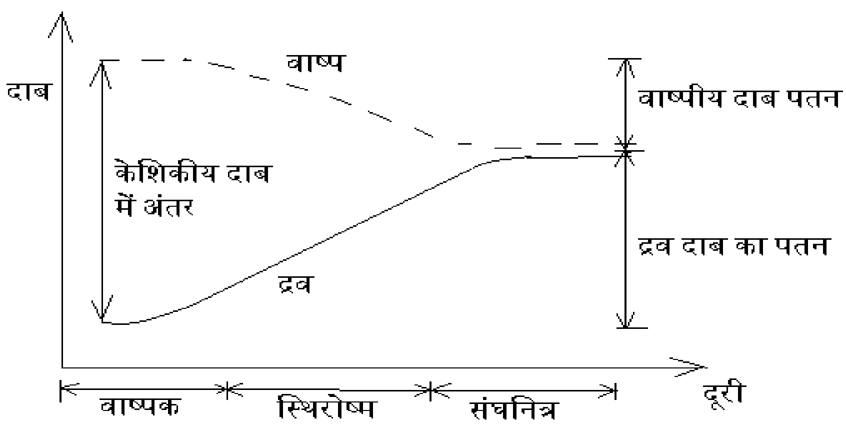

(ब) वाष्प एवं द्रव के दाब का वितरण

चित्र सं.3 ऊष्मा नली में द्रव वाष्प अंतरापृष्ठ का अक्षीय परिवर्तन तथा गुरूत्व बल की अनुपस्थिति में निम्न द्रव प्रवाह दर पर ऊष्मा नली की लंबाई के समानांतर द्रव एवं वाष्प दाब

ऊष्मा नली में वाष्प के प्रवाह के दौरान वाष्प के दाब में परिवर्तन मुख्य रूप से घर्षण, जड़त्व, वाष्पीकरण एवं संघनन प्रभावों के कारण होता है, जबकि द्रव के दाब में परिवर्तन मुख्यतया केशिकीय खांचों से घर्षण के परिणामस्वरूप ही होता है। शून्य दाबीय प्रवणता के कारण संघनित्र क्षेत्र में निम्न वाष्प प्रवाह दर पर द्रव वाष्प अंतरापृष्ठ समतल होता है। चित्र स 3 (अ) तथा (ब) में क्रमानुसार एक प्रतिनिधिक द्रव वाष्प अंतरापृष्ठ की आकृति में तथा द्रव एवं वाष्पीय दबावों के अक्षीय परिवर्तन को निम्न वाष्पीय प्रवाह दरों पर दिखाया गया है। हम चित्र स 3 (ब) में देख सकते हैं कि स्थानीय दाब में अधिकतम अंतर वाष्पक के अंतिम छोर पर होता है। अधिकतम स्थानीय केशिकीय दाब, द्रव तथा वाष्प के दाब पतनों के योग के तुल्य होना चाहिए। गुरूत्व की उपस्थिति में द्रव के दाब का पतन और अधिक हो जाता है, ऐसी दशा में और अधिक केशिकीय दाब अपेक्षित होता है। उच्च वाष्प प्रवाह दरों पर वाष्पीय दाब पतन, द्रवीय दाब पतन से अधिक हो सकता है।

ऊष्मा नलियों के लिए प्रचालन द्रव

ऊष्मा नली के प्रचालन के लिए एक उचित द्रव की आवश्यकता होती है, जिसके वाष्पीकरण एवं संघनन की प्रक्रिया द्वारा ऊष्मा का स्थानांतरण होता है। ऊष्मा नली के निर्माण की प्रक्रिया के दौरान उसे वायुरहित करने के बाद द्रव की निश्चित मात्रा विशेष उपकरणों से उसके अंदर प्रविष्ट कराई जाती है। जैसे-जैसे ऊष्मा नली में द्रव प्रविष्ट कराया जाता है, द्रव, वाष्प में परिवर्तित होकर वाष्प दबाव का निर्माण करता है। उष्मा नली में द्रव की इतनी मात्रा प्रविष्ट कराई जाती है ताकि केशिका बत्ती के खांचों में द्रव संतृप्त अवस्था में रहें। ऊष्मा नली में प्रचालन के लिए उपर्युक्त द्रव का चुनाव उसके प्रचालन के अपेक्षित तापमानों की परास पर निर्भर करता है। ऊष्मा नली के प्रचालन तापमानों की परास उसमें उपस्थित द्रव के क्रांतिक तापमान तथा त्रिक बिंदु तापमानों के बीच हो सकती है। ऊष्मा नली के प्रचालन द्रव से कई अपेक्षाएं होती है जिनमें से निम्न मुख्य है:-

1.केशिका बत्ती एवं ऊष्मा नली की दीवार के पदार्थ से अनूकूलता

2.अच्छी तापीय स्थिरता

3.उच्च गुप्त ऊष्मा

4.उच्च तापीय चालकता

5.द्रव एवं वाष्प की निम्न श्यानता

6.उच्च सतह तनाव

7.प्रचालन तापमान की परास में बहुत कम या अधिक वाष्प दाब न हो

सारणी-1 ऊष्मा नली के लिए विभिन्न प्रचालन द्रवों के तापीय प्राचल

प्रचालन द्रव	गलन बिंदु* (˚C)	क्वथनांक बिंदु* (˚C)	क्रांतिक तापमान (˚C)	तापमान की उपयोगी परास (˚C)
अमोनिया	-78	-33	1326	-60 से 100
पानी	0	100	3743	30 से 200
पोटेशियम	62	774	1977	500 से 1000
सोड़ियम	98	892	2227	600 से 1200
लिथियम	179	1340	3527	1000 से 1800

*वायुमण्डलीय दाब पर

ऊष्मा नली के विभिन्न उपयोगः

1964 में ऊष्मा नलियों के प्रारंभिक विकास से आज तक इनके उपयोग कई क्षेत्रों में किए गए हैं। ऊष्मा नलियां 4 से 3000 केल्विन के तापमान की परास मे कार्य कर सकती है। ऊष्मा नलियों के कुछ मुख्य उपयोगों के बारे में आगे चर्चा की जा रही है।

1. अंतरिक्ष अभियानों के लिए ऊष्मा नलीः- अंतरिक्ष में भेजे जाने वाले मानव निर्मित उपग्रहों में तापमान समानीकरण, नियंत्रण और शीतलन के लिए ऊष्मा नलियां उनके अपेक्षाकृत कम वजन, शून्य अनुरक्षण और उच्च विश्वसनीयता के कारण एक महत्वपूर्ण घटक होती है। उपग्रहों की संरचना का समतापीयकरण एक महत्वपूर्ण समस्या होती है, क्योंकि उपग्रह के एक भाग पर सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के गिरने के कारण अधिक तापमान होता है जबकि उसके अन्य भागों को ठण्डे अंतरिक्ष का सामना करना पड़ता है, इससे उपग्रह की संरचना के तापमान में तापीय विषमता पैदा हो जाती है, इसके परिणामस्वरूप उसकी संरचना में विकृती आ जाती है। उपग्रह के घटकों मे संरचनात्मक विकृती से उसके निर्दिष्ट कार्य करने की क्षमता बुरी तरह से प्रभावित हो सकती है। ऊष्मा नलियां, ऊष्मा को उपग्रह की गर्म सतहों से ठण्डी सतहों पर तेजी से स्थानांतरित करके संरचना को समतापीय बनाने में मदद करती है। ऊष्मा नलियां उपग्रहों में इलेक्ट्रॉनिक घटकों द्वारा उत्पन्न ऊष्मा को भी उनके ऊष्मा अभिगम तक दक्षता से क्षय कर देती है। अंतर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन में उत्पन्न ऊष्मा को अंतरिक्ष में क्षय करने के लिए ऊष्मा नली विकिरकों का विकास किया गया जिनमें 50 फीट तक की लंबाई की ऊष्मा नलियों का उपयोग किया गया है। थर्मल डायोड का उपयोग उपग्रहों में अवरक्त संसूचकों के शीतलन के लिए किया गया है, सामान्य प्रचालन की दशा में थर्मल डायोड संसूचक को ठण्डा रखता है, लेकिन बाह्य ऊष्मा अभिवाह गिरने का दशा में संसूचक का ऊष्मीय वियोजन कर देता है, जिससे उसे तापमान की अपेक्षित सीमाओं में रखना संभव हो जाता है।

2. इलेक्ट्रॉनिक एवं वैद्युत उपकरणों का शीतलनः- इलेक्ट्रॉनिक घटकों के लघुकरण के साथ ही इन घटकों द्वारा ऊष्मा अभिवाह घनत्व में वृद्धि के कारण ऊष्मा क्षय करने वाले तंत्रों पर अतिरिक्त मांग बढ़ जाती है। उदाहरण के तौर पर डिजिटल कंप्यूटर एक कमरे के आकार के तंत्र से एक ऐसी इकाई के रूप में विकसित हो गया है जिसे एक छोटे सूटकेस में आराम से रखा जा सकता है। लेकिन, ऊष्मा उत्पन्न करने वाले इलेक्ट्रॉनिक घटकों की घनी पैकिंग के कारण होने वाली

घटकों के तापमान में अत्याधिक वृद्धि की समस्या भी गंभीर हो गई है। इलेक्ट्रॉनिक घटकों की विश्वसनीयता एवं टिकाऊपन जैसे गुण उनके प्रचालन के तापमान के प्रति संवेदनशील होते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए ऊष्मा नलियों का उपयोग बहुत ही कारगर सिद्ध हुआ है। लेपटॉप कंप्यूटर तथा अन्य छोटे आकार की इलेक्ट्रॉनिक प्रयुक्तियों में इलेक्ट्रॉनिक घटकों के तापमान की समस्याओं के समाधान के लिए सूक्ष्म ऊष्मा नलियों का उपयोग व्यापक स्तर पर हो रहा है। ऐसी इलेक्ट्रिक मोटरों का निर्माण किया गया है जिनके रोटर की परिधि पर ऊष्मा नलियों का निवेश उनके प्रचालन के दौरान शीतलन के लिए किया गया है। मोटरों में बियरिंगों के शीतलन के लिए घूर्णनशील ऊष्मानलियों का उपयोग किया गया है।

3. विभिन्न उद्योगों में ऊष्मा नली का उपयोगः- ऊर्जा की लागत में वृद्धि के कारण उद्योगों में उपयोग के लिए ऊर्जा संरक्षण की नई तकनीकों का विकास हुआ है। ऊष्मा नलियों द्वारा बाह्य शक्ति खर्च किए बिना ही दक्षता से ऊष्मा स्थानांतरण करने की क्षमता के कारण इनका ऊष्मा विनिमयकों में उपयोग किया गया है। ऊर्जा उद्योग में ऊष्मा नली वाले ऊष्मा विनिमयकों का उपयोग हवा के प्राथमिक ऊष्मकों के रूप में किया जाता है। ऊष्मा नली वाले ऊष्मा विनिमयकों का मुख्य लाभ यह है कि प्रचालन के दौरान ये लगभर समतापीय रहते है तथा द्रव के क्षरण की संभावना नगण्य होती है। ऊष्मा नली वाले ऊष्मा विनिमयक एक ऐसे संहत अपशिष्ट ऊष्मा पुनः प्राप्ति तंत्र के रूप में काम करते हैं जिनमें कोई बाहरी शक्ति खर्च नहीं होती है, दाब मे गिरावट भी कम होती है तथा इन्हें स्थापित करना भी आसान होता है।

ऊष्मा नलियों का उपयोग खाद्य प्रक्रम भट्टियों में इनके विकास के शुरूआती दौर से हो रहा है। साधारण भट्टियों में आग की लपटों से पहले ईंटों को गरम किया जाता है, फिर ईंटें ऊष्मा चालन द्वारा पाक कक्ष में खाद्य पदार्थ को ऊष्मा पहुंचाती है जिससे कि खाद्य पदार्थ दहन के उत्पादों से प्रदूषित न हो सके। भट्टियों मे उष्मा नलियों के उपयोग द्वारा ऊष्मा को पाक कक्ष में ऊष्मा नलियों के अंदर होने वाली वाष्पन एवं संघनन की प्रक्रिया द्वारा स्थानांतरित हो जाती है। इस व्यवस्था से भट्टियों में खर्च होने वाले ईंधन मे 25 प्रतिशत की बचत तो हुई ही, साथ ही साथ भट्टी के पाक कक्ष मे लगभग समतापीय वातावरण बन सका। वैज्ञानिकों ने यातायात वाहनों में ब्रेकिंग तंत्र के शीतलन के लिए ऊष्मा नलियों के उपयोग का प्रस्ताव रखा है इससे वाहनों के ब्रेकिंग तंत्र में तापीय प्रतिबल कम होंगे तथा कम तापमान के कारण ब्रेकिंग तंत्र के घटकों की विश्वसनीयता एवं टिकाऊपन भी बढ़ जाएगा। यातायात वाहनों के ईंजन की अपशिष्ट ऊष्मा को ऊष्मा नलियों द्वारा आसानी से पुनः चक्रित करके यात्री केबिन के वातावरण को गर्म करने के लिए किया जा सकता है। शल्य क्रियाओं में अति-निम्न ताप ऊष्मा नलियों का उपयोग मानव शरीर के हानिकारक ऊतकों को नष्ट करने के लिए किया जा रहा है, इससे नजदीक के स्वस्थ उतकों को कम से कम हानि पहुंचती है तथा रक्त स्त्राव भी कम होता है।

निष्कर्षः- हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तापीय एवं ऊर्जा संरक्षण संबंधित समस्याओं के आसान समाधान के लिए ऊष्मा नलियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमारे देश के कई संस्थानों में इसके विकास एवं नवीन उपयोगों पर तेजी से अनुसंधान चल रहे हैं।

संदर्भः- 1.गिलमोर जी, स्पेसक्राफ्ट थर्मल कंट्रोल हैंडबुक, ऐरोस्पेस कार्पोरेशन, केलिफोर्निया, 2002

2.अमीर फागरी, हीट पाइप साइंस एंड टेक्नालॉजी, टेलर एंड फ्रांसिस, न्यूयॉर्क, 1995

समय की समझ

प्रयत्न करता हूँ समझने का
समय की क्या है महत्ता,
कैसा है रंग-रूप, कैसी है बनावट,
कहाँ तक फैली है इसकी सत्ता**?**
सोचते हुए अकस्मात्,
प्रतीत होता है कि विजयश्री
लग गई मेरे हाथ।
नख से लेकर शिख तक,
पहचान गया मैं आपादमस्तक।
बीत रहा जो ये पल-पल है,
ये ध्वनि सी,
समय की ही तो कल-कल है।
मन प्रसन्न हो इठलाता है,
खुशियों से भर जाता है।
इसे अब भागने न दूँगा,
मुट्ठियों में इसे कैद करके रखूँगा।
कि तभी आघात लगता है।
इतना सोचने तक जो बीत गया,
वही तो समय था,
जो हमसे जीत गया।
मन ही मन खीझता हूँ,
मैं अपनी हार पर पछताता हूँ,
समझने के बदले अब,
समय को जीतने का प्रयत्न करता हूँ।

✍ **प्रणेश कुमार**

क्यों पड़ती हैं मकानों में दरारें

- पुरुषोत्तम गुप्ता

ईमेल-**pgupta@sac.isro.gov.in**

मकानों में दरारों का होना न केवल उनकी ख़ूबसूरती को कम करता है वरन् उनकी स्थिरता व सुरक्षा पर भी प्रश्न चिन्ह लगा देता है। दरारों के दुष्प्रभावों में बरसाती रिसाव होना, पेन्ट का उखड़ना, इस्पात की छड़ों मे जंग लगना, और अंततः मकान की मज़बूती पर विपरीत प्रभाव पड़ना - शामिल है। अतः मकान में पड़ी दरारों को गम्भीरता से लेना ज़रुरी है।

इन दरारों के कई कारण हो सकते है। जिनमें से मुख्य हैं - उचित मात्रा में तराई का न किया जाना, कमज़ोर नींव, कमजोर संरचना, इस्पात की छड़ों में जंग लगना, निर्माण में निम्न गुणवत्ता वाले पदार्थों का उपयोग और भूकम्प का प्रभाव।

उचित मात्रा व सही तरीके से तराई न करने पर सीमेंट कंक्रीट व पलस्तर अपनी सही मजबूती प्राप्त नही करते हैं और उनमें दरारें आ सकतीं हैं। सीमेंट को बनाने में लगभग 80 से 85 प्रतिशत तक चूने के पत्थर का उपयोग किया जाता है। इस सीमेंट में पानी मिलाने पर कई प्रकार की जटिल रासायनिक क्रियाएं होती हैं, जिससे यह दिन-प्रतिदिन मजबूत होती जाती है। साधारण सीमेंट तीन दिनों में लगभग 50 प्रतिशत, व सात दिनों में 70 प्रतिशत तक मजबूत हो जाती है। तराई द्वारा सीमेंट में रासायनिक क्रिया के लिए उपलब्ध पानी को वाष्पन से बचाया जाता है। भारतीय मानकों के अनुसार तराई 7 दिनों तक करनी चाहिए।

भवन के शहतीर (beam), खम्भों, छतों आदि की डिज़ाइन उन पर आने वाले भार के अनुसार की जाती है। कई बार, भवन बनाने के बाद बिना संरचना का अध्ययन किए, उसकी डिज़ाइन में परिवर्तन किया जाता है। जैसे कि छत पर पानी की अतिरिक्त टंकी का निर्माण या टंकी को बड़ा बनाना, भवन की मंजिलो को बढ़ाना, छत पर तरणताल या लॉन का निर्माण आदि शामिल है। इस प्रकार के अतिरिक्त निर्माण से भवन की संरचना पर की गई डिज़ाइन से अधिक भार पड़ता है और उसमें दरारें पड़ सकती हैं।

मकान की नींव का डिज़ाइन करने से पहले भूमि की भार वहन क्षमता की जांच कराना आवश्यक होता है। अक्सर इस महत्वपूर्ण गतिविधि को बिना ध्यान में रखे भवन निर्माण किया जाता है। नींव की डिज़ाइन के लिए कई बार आसपास के मकानों को नींव की गहराई के अनुसार, मकान की नींव रखी जाती है। लेकिन हो सकता है कि जिस स्थान पर भवन निर्माण किया जा रहा है, वहाँ की मिट्टी शिथिल हो और वह मकान का भार वहन करने में सक्षम न हो। इस कारण मकान जमीन में धँस सकता है। नींव के गलत डिज़ाइन के कारण मकान अलग-अलग स्थानों पर अलग मात्रा में धँसने के कारण झुक जाता है और उसमें दरारें उत्पन्न हो जाती हैं जिन्हें रोकना बहुत मुश्किल होता है।

प्रबलित सीमेंट कंक्रीट (RCC) की आयु लगभग 75 वर्ष आंकी जाती है। लेकिन इस्पात की छड़ों में जंग लगने के कारण यह आयु कम हो जाती है। जंग लगने के कारणों में निर्माण कार्य में खारे पानी और रिसाइकल इस्पात की छड़ों का उपयोग, छड़ों का उचित मात्रा में कंक्रीट से न ढका होना आदि हैं। इसके अलावा नमी युक्त वातावरण में, कंक्रीट की छोटी-मोटी दरारों द्वारा नमी प्रवेश कर इस्पात की छड़ों में जंग लगा देती है। आरसीसी के भवनों में तनाव बल को इस्पात की छड़ें ही मुख्यतः वहन करती है। जंग लगने के कारण छड़ों का क्षेत्रफल कम होने पर तनाव बल कंक्रीट पर आ जाता है। कंक्रीट की तनाव बल वहन करने की क्षमता न्यून होती है, इसलिए कंक्रीट में तनाव जन्य दरारें उत्पन्न हो जाती हैं।

मकानों में दरारें उत्पन्न होने के एक अन्य कारण में मकान पर भूकंपीय बलों का लगना है। भूकंप के कारण मकान में कंपन उत्पन्न होता है। इस कंपन के कारण भवन पर अतिरिक्त बल लगता है। भूकंप की तीव्रता के आधार पर भारतीय भूभाग को 5 अंचलों में विभाजित किया गया है। यदि मकान इस तीव्रता के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया तो उसकी स्थिरता ख़तरे में पड़ सकती है।

<u>दरारों की रोकथाम के कुछ उपाय :</u>

1. मकान का नक्शा ओर डिज़ाइन तैयार कराने से पहले मिट्टी की भारवहन क्षमता की प्रायोगिक जांच करवा लें, ताकि नींव की डिज़ाइन तदनुसार की जा सके।
2. भवन निर्माण के लिए उपयोग में आने वाली सामग्री की गुणवत्ता पर ध्यान दें। पुरानी सीमेंट, जंग लगी हुई इस्पात की छडें, गंदा पानी, मिट्टी युक्त रेत का उपयोग न करें।
3. मकान को नियमित रुप से पेन्ट कराएं, ताकि दरारों से पानी रिसकर मकान को नुकसान न पहुंचा सके।
4. मकान में लगी इस्पात की छड़ों में 20 प्रतिशत से अधिक जंग लगने पर छड़ों को बदल दें।

***

सृजन

करने आये नव सृजन यहाँ, हम निश्चित कर दिखलाएंगे
नव ऊर्जा से संचित हम सब, आगे ही बढ़ते जाएगें।
सारा भाई के सपनों को, साकार करेंगे ठाना है
कैसे भी हो अंतरिक्ष के, भेदों को अब पाना है।
जो मिली विरासत है हमको, उसके आगे ही है बढ़ना
निशदिन उन्नति की सीढ़ी पर, आगे ही है हमको चढ़ना।
कर्मठता और सच्चाई का हम साथ कभी ना छोड़ेंगे
आएगी गर कठिनाइयां, तो भी हम मुंह ना मोड़ेंगे
अपने सपनों के भारत को, साकार करेंगे ठाना है
आओ सब मिलकर साथ चलें, आगे ही बढ़ते जाना है।

***

आमंत्रण

आ करें मिल नव सृजन हम
निर्माण नव युग का करें
हारें न अब हम विपत्ति से
जो एक होकर ही रहें।
सोचो न तुम अब हाँ करो
आ खड़े हो तुम साथ में
उत्थान होगा सर्वदा
जब हाथ होगा हाथ में

***

नियंत्रण

रक्षा करें धरा से हम, बैठे इतनी दूर
करे नियंत्रण सदैव ही, नजर रखें भरपूर
नजर रखें भरपूर, उपग्रह इन्हें है कहते
वर्षा आये धूप यह, सक्रिय हमेशा रहते
कहें अश्वनी कविराय, दूर है इनकी कक्षा
फिर भी बैठे यहाँ हम, करते इनकी रक्षा

***

✍ **अश्वनी कुमार, वैज्ञानिक-'एसडी'**
एसईडीए-ईओएसजी-एसएफएसडी

हमारे बच्चेः भविष्य की धरोहर

श्रीमती शोभा छाबड़ा (डॉ.आभा छाबड़ा की माँ)

बच्चों का सही समुचित लालन-पालन पारिवारिक दायित्व होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण सामाजिक जिम्मेदारी भी है। विगत वर्षों में घर-परिवार की परिस्थितियां रिश्तों का ताना बाना ऐसा बन पड़ा है कि यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा बन गया है। यदि बच्चों को प्यार-दुलार व सुधार की मीठी-खट्टी घुट्टी नहीं पिलाई गई तो उनके व्यक्तित्व व जीवन दोनों की नींव कमजोर हो जाती है जिसके दूरगामी परिणाम परिवार व समाज में देखने को मिलते हैं। यदि यह मुद्दा सही ढंग से सुलझाया जा सके तो समाज की अधिकांश समस्याएं अपने आप ही सुलझ जाऐंगी।

बच्चों को संवारने से भविष्य संवरेगा

भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण ग्रंथ यजुर्वेद में कहा है - अभिभावक को पता होना चाहिए कि उसे किस प्रकार के बालक को जन्म देना है और किस प्रकार उसका विकास करना है।

"वाचं ते शुन्धार्म प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभि ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि।।"

इस कथन का तात्पर्य यह है कि बच्चे को जन्म देने वाले माता-पिता को शारीरिक रूप से स्वस्थ मानसिक रूप से समुन्नत व अध्यात्मिक रूप से सुसंस्कृत होना चाहिये। बच्चों को सही संस्कार देने के लिए सबसे आवश्यक है वातावरण, बच्चों के साथ किया जाने वाला व्यवहार एवं अपने बालकों से माता-पिता की अपेक्षाएं। बढ़ते हुए बच्चों की आधारभूत जरूरत है वातावरण क्योंकि यह बिना कुछ कहे सब कुछ कह देता है। बिना कुछ सिखाए सब कुछ सिखा देता है। बच्चों के अनुभव करने की क्षमता जन्म से ही पर्याप्त विकसित व संवेदनशील होती है। वे अनायास ही कोमल व कठोर भावनाओं से परिचित हो जाते हैं। वे अपने आसपास की सकारात्मकता व नकारात्मकता से भी अधिक प्रभावित होते हैं। बच्चों के लिए सहज अनुभव करने योग्य वातावरण का बहुत महत्व है। वातावरण में ऐसी चीजें घुली हो या घोली जाएं जिन्हें बच्चे आसानी से महसूस कर सकें क्योंकि वे उनके विकास के लिए सहयोगी व सहायक बनती हैं।

बच्चों की परवरिश में दूसरी महत्वपूर्ण बात है बच्चों के साथ किया जाने वाला व्यवहार। माता-पिता व घर के अन्य सदस्य बच्चों के साथ जो व्यवहार करते हैं उसका पर्याप्त महत्व है। सामान्य क्रम में यह व्यवहार पर्याप्त जटिल एवं आडंबरपूर्ण होता है। कई बार औरों को दिखाने के लिए अहंकारपूर्ण प्रदर्शन के लिए बच्चों के कोमल मन पर बेवजह का बोझ डाल दिया जाता है जबकि इसकी कोई आवश्यकता नहीं होती। बच्चों के साथ व्यवहार उनकी शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक स्थिति के अनुसार होना चाहिये यानि उसमें स्वाभाविकता, सहजता, सरलता व सुस्पष्टता का समावेश हो साथ ही उसमें उनके लिए प्यार व अपनत्व का गहरा समावेश हो। ऐसा व्यवहार ही बच्चों की नजर में उनके माता-पिता को विश्वसनीय व हितैषी बनाता है और वे अपने आपको सहज व सुरक्षित महसूस करते हैं। बच्चे जितना अधिक स्वयं निश्चिंत, सुरक्षित व सकारात्मक अनुभव करेंगे उतना ही व अधिक विकसित होंगे। उनके व्यक्तित्व की आधारशिला मजबूत होगी। उनके साथ किया जाने वाला व्यवहार ही उनके लिए टीचिंग, टयूशन व कोचिंग है। कई बार व्यवहार और शिक्षा में फर्क कर लिया जाता है। प्रायः माता-पिता या अभिभावकों द्वारा किए जाने वाले व्यवहार व बातचीत की नकल बच्चे करते हैं यही वजह है कि माता-पिता की आदतें, बोली और हाव-भाव के अन्दाज़ उनके बच्चों में स्वतः ही आ जाते हैं।

कैसे करें बच्चों का सर्वांगीण विकास?

माता-पिता के लिए सन्तान ही सब कुछ है उनकी जिन्दगी भर की सम्पदा और धन दौलत से कहीं अधिक, लेकिन इसी संतान की देख-भाल में अभिभावक कितनी उपेक्षा बरतते हैं शायद उनको भी इस बात का

आभास नहीं होता। आज के समय में अभिभावकों की सबसे बड़ी संपत्ति कहे जाने वाले ये बच्चे ही सबसे अधिक उपेक्षा का शिकार अपने अभिभावकों से हो रहे हैं। आज अपने बच्चों के लिए अभिभावक समय ही नहीं निकाल पा रहे हैं। वे अपने बच्चों को स्कूल भेज कर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। अभिभावकों को यह जानना आवश्यक है कि बच्चे का सही विकास तभी संभव है जब माता-पिता अपना प्यार भरा स्नेह आंचल उसे देते हैं जिससे उसकी भावनाएं पोषित होती रहें। बच्चा अपने माता-पिता के सानिध्य के लिए हर पल तरसता है। बच्चों की भावनात्मक प्यास को बुझाने के लिए केवल उपहार देना ही काफी नहीं है बल्कि उसेक साथ समय बिताना उससे भी ज्यादा ज़रूरी है।

प्रायः अभिभावक अपने बच्चों से उनकी क्षमता का मापन किए बगैर ही बहुत कुछ अपेक्षा करते हैं। अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का बोझ मासूम बच्चों के ऊपर डाल देते हैं और बच्चे वैसा नहीं कर पाते, जैसा वे चाहते हैं। बच्चे का जो स्वाभाविक विकास होना चाहिये वह माता-पिता की चाह पूरा करने में कुछ और ही रूप ले लेता है। कभी-कभी बच्चा विरोध भी करता है क्योंकि उसे अपनी रूचि एवं क्षमता के अनुसार विकास करना अधिक सहज एवं सही महसूस होता है। अधिकांश अभिभावक अपने बच्चे को न समझते हैं, न समझना चाहते हैं और इसलिए उनका व्यवहार बच्चों के लिए एक समस्या बन जाता है और बच्चे उनके लिए समस्या का केन्द्र-बिन्दु बन जाते हैं। उसके मूल कारण माता-पिता अथवा अभिभावकों की उपेक्षा, प्यार की कमी, तिरस्कार, प्रशंसा का अभाव, आदि हैं। ऐसे बच्चों के अभिभावक उन्हें बच्चा न मानकर अपने ही स्तर का समझने की भूल करते हैं और उनसे बहुत कुछ अपेक्षा करने लगते हैं उसे पूरा न कर पाने पर ताने देते हैं, अपशब्द कहते हैं एवं अन्य बच्चों से तुलना करते हैं। इससे बच्चों में कुंठा विद्रोह का अंकुरण, हीनभावना एवं उदासीनता इत्यादि पनपने लगती हैं। अपने बच्चों को सजा देने में इस प्रकार का व्यवहार करते हैं मानो एक शत्रु से निपट रहे हों। गुस्से में बच्चे की पिटाई कर देना, थप्पड़ मारना, उसके कान खींचना, डाँटना, अपशब्द कहना, लकड़ी या चप्पल से मारना, आदि व्यवहार बच्चों के कोमल मन पर अभिभावकों के प्रति ऐसी छाप छोड़ देते हैं जिसे वे मासूम बच्चे अपनी पूरी जिन्दगी नहीं भूल पाते। आश्चर्य की बात तो यह है कि अभिभावकों को यह बात पता ही नहीं होती कि उनके कारण उनके बच्चों को भविष्य में किस प्रकार के विकृत व्यवहार, हीनभावना का सामना करना पड़ेगा। इस प्रकार अभिभावक ही अपने बच्चों के विकास में सबसे बड़े बाधक बन जाते हैं।

अभिभावक बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माता नहीं है केवल निर्माण में सहायक हैं। यदि बच्चे भटकते हैं या अन्य बच्चों से पिछड़ रहे हैं तो उन्हें भरपूर सहयोग करना चाहिये। यदि बच्चा अपने मात-पिता की बात नहीं मानता तो अभिभावकों को ही अपना आत्मविश्लेषण करना चाहिये। बच्चों से संवाद करना एक कला है उसे सीखना चाहिये।

गर्भ से ही दें बच्चों को अच्छे संस्कार

हमारे पूर्वजों ने गर्भाधान संस्कार को हमारी भारतीय संस्कृति में कराऐ जाने वाले षोड़श संस्कारों में से एक माना था। और उसे पूर्ण पवित्रता के साथ सम्पन्न करने की प्रथा प्रचलित थी। बालक का निर्माण माता-पिता भाव भरे वातावरण में किया करते थे व जैसी आवश्यकता होती थी वैसी संतान समाज को देते थे। बच्चों को सुसंकारित करने का सबसे उपयुक्त समय उनका गर्भकाल है। गर्भधारण काल में माता का चिन्तन, चरित्र व व्यवहार तथा जिस तरह का वातावरण उसे मिलता है वह सब बच्चे के अन्दर सूक्ष्म रूप से समाहित होता जाता है।

बच्चों की अधिकांश समस्याओं का समाधान बड़ी आसानी से हो जाएं यदि यह स्वीकार कर लें कि उनका बच्चा तो बच्चा है। बचपन उसके सीखने की शुरूआत है अभी उसे बहुत कुछ सीखना है। बच्चा धीरे धीरे सीखता है। अभिभावकों का दायित्व है कि वे अनुकूल परिस्थितियां जुटाएं और बच्चों को अपने जीवन का रास्ता चुनने में सहयोग करें। ऐसे सुसंस्कारित बच्चों से ही हमारा राष्ट्र व समाज का भविष्य उज्जवल होगा।

***

छंद

✍ अश्वनी कुमार गुप्ता, वैज्ञा/ अभि.-एसई

(1)
कहाँ सबेर होत है,कैसे ढले दिन पहार
प्रभु संग बिछडे क्या हम
दुःख पाये है अपार

मिली बिछुरन के खेल में
जीत भई ना हार
ज्यूं चंदा संग बादर खेले
धूप भई ना बरसात

अगिला पग धरू कहाँ
धरती मिला ना आधार
मोरी प्रीत संग ना करौ मिचौली
दोऊ कर जोरू सरकार

कहाँ करू सखी लेत करवट
नैना बरसे टूटे हार
'अश्वनी' के पिया कब मिलोगे
तुम बिन है नाव मझधार

(2)
यह बिनती तुमसो रघुराई
बेगी हरो दुःख लीजो कंठ लगाई

एक चोट से उबर सके ना
जग दूजो चोट लगाई
किसको पुकारे इन शहर में
सब ही लगे पराई

झेलत-झेलत तीर सीने पे
जो काठ घुन खाई
अब पीर न सहत जात है
कह दो प्रभु से जाई

दोऊ कर जोरे साझ सबेरे
पाठ करौ मन लाई
रिसते नाते सबही छोड के
'अश्वनी' शरन में आई।

(3)
आज भई बरसात
बहुत दिना के तरसे थे हम
आज बनी सौगात

बिन जल हिय बनी पाथर
जिया रहत कुम्हलात
हरि जब आये नैना द्वारे
तब लगी तन कुसलात

कैसे थमे जब बह निकले
सांझ भये कि रात
बिन पावस, पावस ऋतु आई
मन काहे न अकुलात

हिय ऊपर जब बरसा पानी
छाती भई शीतलात
'अश्वनी' चलो आज प्रीत बन बरसे
सब जन यही समझात

(4)
भाई धन पायो सुमिरन माल
कहा प्रभु बिटले पावत है रखियो
'अश्वनी' खूब संभाल

सजे संवर केश सजाये दर्पन में
अगर चंदन की तिलक दू भाल।
हाथ लिये बैठो चंदन माहि
सुमिरो आज बिसरो नाही काल।

जागत सोचत दिन रैन सुमिरो
करी भजन कर बजावो ताल।
माला शक्ति को भरम मत लाना
होनी होत देत अनहोनी टाल।

अवगुण न राखे गुण बीन लीन्हो
दूरी करे सब माया जाल।
माला सू निपूजे लोक खजाने
'अश्वनी' के प्रीतम नन्दगोपाल।

***

इंसान

भीड़-सी इस दुनिया में,
कितना तनहा है इंसान।
काफिरों के इस रेले में,
कितना छोटा है भगवान।

रास्ते के पत्थर की तरह पड़ा,
बेजान सुबक रहा है इंसान।
मृतकों के इस काफिले में,
कहाँ खो गया है भगवान।

बाघों ने अपने को छोड़ा,
सर्पों ने भी दूसरे पर फूँका,
अपनी ही माँस नोचकर,
कितना पतित हो गया इंसान,

भीड़ सी इस दुनिया में,
कितना तन्हा है इंसान।

मशीनों को रोज चमकाता,
बाहरी आवरण खूब सजाता,
पर हाय री किस्मत,
मन का मैल बढ़ता जाता।

अपने में खुद को ढूँढ ना पाए,
कितना बेबस है इंसान,
दिखावे के इस दुनिया में,
सचमुच बहुत अकेला है इंसान।

*****

✍ हेमन्त प्रकाश,
एएमएफआइडी/ एमइएसए

एहसास

तू नहीं तो ये दुनिया उदास लगती है
हर पूनम की रात मुझे अमावस लगती है
मैं देखता हूँ तुझे बारिश के "बिन्दु" में
मेरे नेनों में तेरा निवास लगता है।

आंसू के अकाल में बोई है प्रेम की फसल हमने
तेरे नाम पर सजायी है यह कविता हमने
हृदय मेरा तेरी यादों में खोया रहता है हर पल
तू भी मुझे चाहती थी ऐसे ही पल पल
तेरे हृदय पर लिखा मेरा नाम हमेशा बनाए रखना
भरोसा नहीं रहा इस दुनिया पर मुझे
इस कविता से संदेशा पहुंचाता हूँ तुझे
जरूरत पड़े तो कह देना कि चाहत का
ऐलान हम नहीं करना चाहते
हमारी मोहब्बत को हम तमाशा बनाना नहीं चाहते
इसलिए "भगवत" दिल के उस दर्द को
गली गली कहना नहीं चाहता
आज भरी महफिल में अकेला नजर आता हूँ
तेरे बगैर यह दुनिया विरान नजर आती है
जी करता है दुनिया छोड़ दूँ आज ही, पर
तू आएगी मिलने यह एहसास महसूस करता हूँ
कैसे रंगीन थे वो बीते दिन
बस वही याद करके आज खुशी महसूस करता हूँ
जिंदगी जीने का मोह नहीं रहा "भगवत" को
क्योंकि तेरे बगैर इस प्रकाशमय जिंदगी में
अंधकार महसूस करता हूँ
हमेशा स्वप्न तेरे देखता हूँ इच्छा है
तुझे एक बार मिलने की
रोज मन से तुझे मिला करता हूँ
तु तस्वीर है मेरी आँखों की
हृदय में संजोए रखता हूँ,
तेरे आने की प्रतीक्षा करता हूँ
इसलिए सालों से इंतजार करता हूँ
रात-दिन सिर्फ तुझे याद करता हूँ
*****

✍ जैमीन शाह 'भगवत',
वरिष्ठ सहायक

वृक्ष की आत्मकथा

- जसोता एम.सुहंदा,
ईएनटीएसजी/ईएसएसए

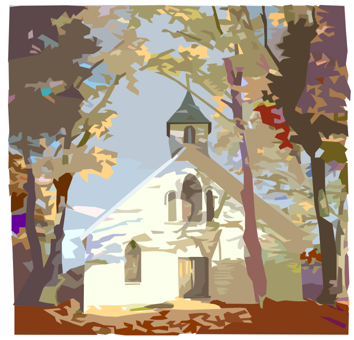

इन्सान को कई प्रकार के दुःख दर्द होते हैं लेकिन उन को जुबान है, वह अपना दर्द किसी को बता कर अपना दिल हल्का कर सकते हैं और बोलते हैं इन आँखों में भगवान ने जो आंसू भरे हैं वह भी बड़े काम के हैं, आंसुओं से भी इन्सान का मन हल्का होता है ये तो सब जानते हैं।

लेकिन जो जड़ चीजें हैं वह अपना दुःख सुख कैसे किसको बताएं? उनके दुःख सुख को समझने के लिए किसी इन्सान का दिल चाहिए तो चलिए देखते हैं कि पेड़ को कौन सा दुःख है? कौन सी दर्द भरी दास्तान है।

पेड़ बोलता है - मैं छोटा-सा कण भर बीज था। मैं एक दुकान में आराम कर रहा था जब मैं माली के हाथ में आया तो माली ने मुझे धरती माता के अंदर डाल कर, ऊपर से खाद और मिट्टी डाल कर बंद कर दिया और ऊपर से खूब पानी और सूरज देवता की तपत दी। कुछ समय बाद अंकुर के रूप में मैं धरती माता की गोद से बाहर निकला तो आते-जाते जानवर मुझे खाने लगे, लोग मेरे पत्ते तोड़-तोड़ कर फेंकने लगे। लोगों और जानवरों से रक्षा करने के लिए माली ने मुझे फिर से लोहे की जाली में कैद किया।

अब धीरे-धीरे मेरी जवानी आने लगी, जब जवान होकर लोगों को फल-फूल और ठंडी हवा देने लगा तो लोग मेरी छाया में बैठ कर ठंडी हवा लेते, आराम फरमाते फिर भी पत्थर मार-मार कर मेरे फल-फूल तोड़ते रहे। बंदर मेरे ऊपर नाचते-कूदते, गंदगी करते, पक्षी भी मेरे पत्तों को खराब करते इतना सहन करते हुए भी कुछ न कह सका। बस अंदर ही अंदर आंसू पीता रहा, पीता रहा, लोगों की मार खाता रहा। सोचता था ठीक है बंदर-पक्षी तो अविवेकी हैं लेकिन जब इंसान जैसा विवेकी प्राणी भी मुझे पत्थर मारे, आप सोचिए जरा तब कितना दुःख होता होगा मुझे!

लेकिन सोचता था दुःख को लेकर बैठ जाऊंगा तो जीवन व्यर्थ ही चला जाएगा। सेवा कर नहीं सकूंगा, हमें जीवन मिलता ही है - सेवा के लिए । कहते हैं अपने आंसू छुपाना तो अच्छी बात है लेकिन सहन करते-करते आखिर दिल तो भर ही जाता था, दो-चार आंसू कभी निकल ही जाते थे।

आंसू पीते-पीते अब मेरी जीवन संध्या आने लगी, धीरे-धीरे मेरा जोश ढीला होने लगा। फल-फूल पत्ते सब गिरने लगे। जंगल वालों ने मुझे काट कर किसी दुकानदार को बेच दिया तो दुकानदार ने मुझे रंधा-हथोड़ा, कीले मार-मार कर, आरी से काट कर नया रूप दिया। अब मैं फर्नीचर के रूप में घर-घर में सुख देने लगा। सुख देने में मुझे भी खुशी होने लगी, लेकिन खुशी भी कब तक?

कुछ वर्षों के बाद मेरा फिर से रूप-रंग बदलने लगा, लोग मुझे काट कर चूल्हे में जलाने लगे, चूल्हे में जलते-जलते मैंने खाना पकाकर लोगों का पेट भरा, रेल के इंजन में जल कर लोगों को देश के कोने-कोने की सैर कराई। इतना सब सहन करते-करते अब मेरी हड्डियां भी टूट गई, मेरा रंग भी काला हो गया, लोग मुझे बड़ी नफरत से देखने लगे कि कोयले का संग मत करो, कोयला काला हाथ कपड़े सब काला करेगा, लाल होगा तो जला के भस्म कर देगा। लेकिन फिर भी उन्होंने मुझे नहीं छोड़ा, फिर से आग में डाला। प्रेस में जलकर लोगों के कपड़े प्रेस किए। अब आग में जलकर मैं तो राख हो गया फिर भी घर-घर में लोगों के झूठे बर्तन साफ किए।

हाय ! अब तो मेरा अस्तित्व ही नहीं रहा।
किसे सुनाऊं ये दर्द भरी दास्तां???

***

क्या खोया क्या पाया

- **चंद्रप्रकाश सिंह**

सुहाना से नाता टूटने के पाँच साल बाद, नव वर्ष की शुभकामनाओं का ई-मेल मिलने पर अतीत ने अंगड़ाई ली। मन की सोच बंदर की तरह भटकने लगी। सारी पुरानी बातें और मुलकातें चलचित्र की तरह आँखों के सामने चलने लगीं। दिल में ख़याल आया कि अभी फोन उठा कर उसके मोबाइल पर एक कॉल करूं, लेकिन जैसे ही उसका मोबाइल नंबर उसके ई-मेल के सिग्नेचर में देखा तो मेरे मन में एक विचार कौंधा, यह नंबर तो जाना-पहचाना लग रहा था। जिस नंबर को मैंने कई बार यह मानकर काट दिया था, कि यह लोन-वोन देकर मेरा सुख चैन हराम करने के लिए किसी बैंक वाले का फोन है, यह तो वही नंबर था।

दिल जोर-जोर से धड़कने लगा कि मैंने यह क्या कर दिया, मैंने कितनी बार सुहाना का दिल तोड़ा और वह आज भी मुझे याद करती है। पिछला कॉल देखा तो मोबाइल के रिकॉर्ड में वह 31 दिसंबर की रात का था, अरे! मैं तो उस समय दोस्तों के साथ मौज-मस्ती कर रहा था। पेब्बल्स बार की रात में मैंने इस कॉल को उठाने की जहमत भी नहीं उठायी थी। आज ऐसा लग रहा था मानो मैं दुनिया का सबसे बदनसीब इंसान हूँ, मेरे पहले प्यार को मैंने कितनी आसानी से नजर-अंदाज कर दिया था। मेरे कैरियर बनाने की चाहत ने अपने सबसे ज्यादा करीब, दिल के करीब बसी सुहाना को भुला दिया। आज मुझे कुछ भी करके उसको कॉल करना ही था। मुबंई की इस सुबह को मैं आज अपनी सबसे अच्छी और कोमल सुबह बना लेना चाहता था।

ट्रिंग-ट्रिंग.......ट्रिंग-ट्रिंग.......अरे! यह क्या, सामने से आवाज आयी कि आप जिस नंबर को डायल कर रहें हैं, वह मौजूद नहीं है। मेरा दिल बैठ गया। अब मेरे पास उसको ई-मेल से जवाब भेजने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था। मेल भेजने में मुझे दो घंटे लग गये, कभी कुछ लिखा और मिटाया, कभी कुछ लिखा और मिटाया, मानो भावनाओं के लिए शब्द ही नहीं मिले रहे थे। अंततोगत्वा मैंने सिर्फ "आपको भी नववर्ष की शुभकामनाएं " लिख का मेल का 'सेंड' बटन दबा दिया। मानो कि सिर से कोई बहुत बड़ा बोझ हल्का हो गया। दिन भर के कामों से फ़ारिग़ होकर जब ऑफिस की ओर चला तो दिमाग बार-बार मेरे 'ब्लेक-बैरी' पर ही जा रहा था कि काश अभी उसका मेल आए और मैं अगले मेल के 'रिस्पांस' में उसका नंबर मांग लूँ।

ट्रैफिक में फंसे हुए 'मरीन ड्राइव' की सड़क पर चलते हुए लोग मुझे किसी पुतले की तरह दिख रहे थे। आज यह शहर मुझे अजीब लग रहा था, कहीं पर भी कोई जीवन नहीं लग रहा था, सिर्फ समुद्र की लहरों का शोर ही था जो कि मेरे दिल के जज़्बातों से मेल खा रहा था। सारे जीवन का लेख-जोखा कर डाला था मैंने इसी साठ सेकेंड की लाल बत्ती में। ऑफिस पहुँच कर भी इंटरनेट पर बैठ गया और फेसबुक पर "सुहाना पंडित" नाम का सर्च दे दिया। कुल मिलाकर 514 "सुहाना पंडित" बरामद हो गईं। भूसे के ढेर से सुई ढूँढ़ने का काम चालू हो गया। अब तो मुझे सिर्फ इतना ही याद है कि सुहाना की फेमिली पाँच साल पहले पूना से मुंबई चली गयी थी। मुझे मुंबई आए सिर्फ एक साल हुआ है। मुझे इसके आलावा उसके बारे में कुछ पता भी नहीं था फिर से सारा चलचित्र चलने लगा। "तुम कोई भी काम ठीक से क्यों नहीं करते, आइसक्रीम ऐसे नहीं खाते" और फिर मैंने तपाक से मैंने सुहाना की आइसक्रीम खा, उसकी जूठी आईसक्रीम जो तब और भी ज्यादा मीठी हो गयी थी।

सारी बातें सोचते-सोचते मैंने झपकी ले ली, और तभी मेरे फोन की घंटी बजी, मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। सामने वही नंबर था। मैंने जल्दी से फोन उठा लिया और सामने से जो आवाज सुनाई दी वह एक लड़की की थी लेकिन उसने अपने आप को प्रीति कह के परिचय दिया और बैंक लोन का ऑफर देने लगी। मैंने उससे कहा कि मुझे लोन लेना है, लेकिन एक इन्फॉर्मेशन जानने के बाद, लोन के बारे में बात करेंगे। उसने अपनी रोबॉटिक भाषा में जानना चाहा कि मैं क्या जानना चाहता हूँ। मैंने सुहाना के बारें में पूछा तो सामने से जवाब आया "यहाँ शिफ्ट में काम होता है, और तकरीबन 1500 लोग काम करते हैं, ज्यादातर लड़कियाँ हैं, और मैं नयी हूँ, मैं इससे ज्यादा नहीं जानती।" मेरी बेकरारी बढ़ती जा रही थी और तभी फोन डिस्कनेक्ट हो गया। लेकिन उस रोबॉटिक आवाज़ में मुझे मेरी सुहाना की सुगंध मिलने लगी थी। मुझे आभास हो गया कि शायद वह सुहाना ही थी। कॉल सेंटर में सारी लड़कियाँ अपने सही नाम से शायद अपना परिचय

ना देती हों, ऐसा सोच कर फोन लगाया तो फोन फिर से अपना चिर-परिचित "नंबर मौजूद नहीं है" का राग अलापने लगा। मैं बड़ी दुविधा में पड़ गया तभी मुझे ब्लेक-बैरी से सिग्नल आया कि मेल रिसीव हुआ है। देखा तो पाँच ई-मेल थे और उनमें से एक सुहाना का भी था।

मेरे शरीर में रोमांच भर गया, और ट्रैक बॉल को अंगुलियों ने जैसे ही स्पर्श किया, लगा मानो सुहाना के हाथ पर मैंने अपना हाथ रखा दिया हो। अपने पहले साल की मुलाकात, कॉलेज का वह पहला दिन, जब क्लासरूम में मैंने गलती से उसके हाथ पर हाथ रख दिया था और मेरे हाथ की अँगूठी के रिंग की छोर उसके ऊपर पड़ गयी थी। जब मैंने सॉरी बोला तो उसने सर झुका कर बोला था, 'ईट्स ओ.के' और तभी मेल खुल गया और मैं अपनी दुनिया में वापस आ गया। मेल देखा तो यह सिर्फ एक 'रीड रिसीप्ट' था। तभी एक और मेल आया जिसमें लिखा हुआ था कि 'सुहाना' सैंट-फ्रांसिस्को में है और अपने हनीमून के लिए वहाँ गयी हुई है।

अब तो दिल में जैसे सारे के सारे तार टूटने लगे और लगने लगा कि मैंने सब कुछ पाने की चाहत में बहुत कुछ खो दिया, मुझे शायद पहले खत का जवाब देना चाहिए था। 'सुहाना' ने मुझे कॉन्टेक्ट करने की कोशिश पहले भी की थी लेकिन मेरे पास वक्त नहीं था। आज जब मुझे उसकी जरूरत महसूस हो रही है, सारे अरमान चकनाचूर हो रहे थे।

मेरे साथ जो हो रहा था उसका मुझे मलाल था और जिंदगी में फिर कभी ऐसा न हो उसके लिए एक सबक भी था। अब मुझे जिंदगी में सारे लोगों पर ध्यान देना था। मैंने पिताजी को फोन लगाया और हाल-चाल पूछा। उनसे बात करके और माँ का आशीर्वाद पाकर जो खुशी मिली वह बयान नहीं कर सकता। कुछ खोकर मैंने आज बहुत कुछ पाया भी था।

***

माता की आज्ञा का पालनः संतान का परम कर्तव्य

- **जितेन्द्र खर्डे,**
एससीटीडी/एसएनएए

कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति और उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। इसी कारण से उन्हें विदेश जाने के अनेक अवसर प्राप्त हुए थे, वे जाना भी चाहते थे, लेकिन माताजी की अनुमति न होने के कारण वे कभी भी विदेश नहीं जा सके। उनकी माताजी पुराने विचारों को मानने वालों में से थीं। विदेश जाना उनकी दृष्टि में संस्कारों के उल्लंघन के समान था। उन्होंने अपने पुत्र आशुतोष को विदेश जाने की अनुमति कतई नहीं दी।

उस वक्त के तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर लॉर्ड कर्ज़न आशुतोष मुखर्जी के ज्ञान एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे। वे उनके द्वारा भारत में किए गए उत्तम शिक्षण कार्य की एक झलक ब्रिटिश सरकार को दिखाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने आशुतोष को एक बार ब्रिटेन का दौरा करने के लिए कहा। आशुतोष ने अपनी माताजी की सहमति न होने की बात कही।

लॉर्ड कर्जन को यह बात कुछ अजीब-सी लगी कि माताजी की अनुमति के बिना आशुतोष विदेश जाने के लिए तैयार नहीं थे। वे एक सुनहरा मौका गवां रहे थे। उन्होंने अपनी सत्ता तथा अहंकार भरे स्वर में आशुतोषजी को कहा घर जाओ और माताजी से कहो कि भारत के गवर्नर लॉर्ड कर्जन तुम्हें ब्रिटन जाने की अनुमति दे रहे हैं। तभी आशुतोष ने बड़ी ही विनम्रता एवं आत्मविश्वास के साथ लॉर्ड कर्जन को जवाब दिया कि अगर बात यह है तो मैं माननीय गवर्नर जनरल लॉर्ड को बताना चाहता हूँ कि मैं आशुतोष मुखर्जी अपनी माताजी की इच्छा की उपेक्षा करके किसी अन्य व्यक्ति की आज्ञा का पालन कभी भी नहीं करता, फिर भले ही वह किसी भी देश का गवर्नर जनरल हो या फिर उससे भी कोई बड़ा आदमी। मैं अपनी माता की अनुमति के बिना कोई भी कार्य नहीं करता।

कथा का सारांश यह है कि माता अपने शिशु को गर्भकाल से लेकर उसके जन्म और उसके बाद उसके लालन-पालन में भी जो त्याग, बलिदान और कितनी ही परेशानियों का सामना करती है उतना इस धरती पर किसी के लिए दूसरा कोई भी नहीं कर सकता। अतः माता की आज्ञा का पालन करना हर व्यक्ति का परम कर्तव्य है।

***

वह भयानक रात.......

डॉ.मनीष वी.पंड्या,

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग

वह दिन बड़ा ही खुशगवार था। माधवी आज जल्दी ही जाग गई थी। हायर सैकेन्ड्री का परिणाम जो आज निकलने वाला था। माधवी मन ही मन चाह रही थी कि उसे 95 प्रतिशत अंक मिलें। उसकी आशा भी यही थी। साथ में उसकी मेडीकल लाइन में प्रवेश पा कर डॉक्टर बनने की इच्छा पूरी होने वाली थी।

आखिर वह दिन आ ही गया। माधवी कई दिनों से आज के खास दिन की प्रतीक्षा में थी। माधवी ने इंटरनेट पर अपना परिणाम देखा तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ। उसकी आँखों में हर्षाश्रु उमड़ पड़े उसने 12वीं कक्षा में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त किये थे। वह खुशी से झूम रही थी और सातवें आसमान पर थी। उसने चिल्लाकर कहा "माँ! देखो तुम्हारी लाड़ली ने 12वीं कक्षा में 96 प्रतिशत अंक पाये हैं। अब डॉक्टर बनने से मुझे कोई रोक नहीं सकता। माँ, अब तो मेरा सपना साकार होनेवाला है।" उसने माँ के पैर छुए, तो माँ ने उसे गले लगा लिया, आशीर्वाद दिया और कहा "मेरी गुडिया रानी अब डॉक्टरनी कहलायेगी। मैं बीमार पडूंगी तो मेरी दवाई तो करोगी ना !!"

"आज तुम्हारे पिताजी जिंदा होते तो कितना खुश होते!!" इतना कह कर उसकी माँ रो पड़ी। कुछ क्षण के लिए वातावरण में गंभीरता छा गई। दोनों ही माँ-बेटी ने एक दूसरे से कुछ भी कहना मुनासिब न समझा। फिर माधवी ने माँ से कहाँ "माँ, तुम बीमार पड़ोगी तो मैं दवाई दूंगी ना!!, मैं ऐसा करूंगी कि तुम कभी बीमार ही न पड़ो।" और हाँ, ऐसी अशुभ बातें मत किया करो, मैं तुम्हें बीमार देखना बिल्कुल ही पसंद नहीं करूंगी। मैं तो बहुत पढ़ाई कर डॉक्टरनी बन कर समाज की सेवा करना चाहती हूँ। माँ, मुझे ऐसा आशीर्वाद दो कि मैं एमबीबीएस अव्वल दर्जे से पास करूँ। पिताजी भी यह समाचार सुनते तो कितने खुश होते कि उनकी बेटी अब डाक्टरनी बनने जा रही है।"

आखिर वह दिन भी नजदीक आ ही गया। माधवी को राज्य के अव्वल दर्जे के मेडीकल कॉलिज में प्रवेश मिल गया था। आखिर उसकी मेहनत, नसीब तथा माँ के आशीर्वाद का यह परिणाम था। मेडीकल में प्रवेश के साथ-साथ उसे हॉस्टल में भी आसानी से प्रवेश मिल गया था। उसने अधिकतम अंक प्राप्त किये थे अतः पढ़ाई का तथा हॉस्टल का खर्च भी कम आनेवाला था।

आज प्रथम वर्ष की पढ़ाई का पहला दिन था। सभी नये डॉक्टर खुशी के माहौल में सराबोर थे। सभी के चेहरे ताजगी से भरे लग रहे थे। तभी माधवी को किसी ने पीछे से पुकारा "हाय! मैं पूजा हूँ। डॉक्टर पूजा!!" इतना कहकर उसने माधवी की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया। "मैं अभी तो डॉक्टर की पढ़ाई करनेवाली हूँ, और अपने आपको डॉक्टर बता रही हूँ, कैसा लग रहा है तुम्हें?" माधवी ने भी हँसकर उससे हाथ मिलाया। उसे पूजा बड़ी खुशगवार, हँसमुख तथा तेजतर्रार लगी। उसे पूजा पसंद भी आयी। पूजा ने माधवी से फिर कहा "माधवी, मुझे किसी ने बताया कि तुम माधवी हो इसलिए मैं तुम्हारे पास आयी हूँ। यही नहीं, मैं हॉस्टल में तुम्हारी रूममेट भी हूँ। मुझे विश्वास है, हमें एक साथ एक कमरे में रूम शेयर करने में बड़ा मजा आयेगा।" इतना कह कर वह शांत हो गयी।

माधवी अभी कुछ बोलती उसके पहले ही उसने माधवी से कहा "देखो माधवी, मैं ज्यादा बोलना पसंद नहीं करती। कम ही बोलती हूँ। पता नहीं लोग मुझे क्यों "शोले" फिल्म की बसंती कह कर बुलाते हैं। यही तो मेरी आदत है। माधवी ने मन ही मन कहा "लोग सही कहते हैं। तुम किसी को बोलने का मौका ही कहाँ देती हो?" माधवी को पूजा का चुलबुलापन पसंद आया, भले ही वह बातूनी थी। कुछ क्षणों के लिए शांति छा गयी। तभी पूजा ने तपाक से कहा "हाँ, मुझे गिटार बजाने का शौक है और मैं लताजी, आशाजी, सुमन कल्याणपुर जैसी गायिकाओं के गाने भी अच्छी तरह गा लेती हूँ। इतना ही नहीं, मैंने तीन वर्षों तक बाकायदा गाने की शिक्षा भी ली है। देखना, हमारे कॉलेज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मैं छा जाऊंगी। मुझे बड़ा पसंद है - गाना, हँसना, हँसाना, खुश रहना और सबको खुश देखकर खुश होना।"

माधवी ने पूजा से कहा "देखो पूजा, अब तुम मुझे थोड़ा वक्त दो और बोलना बंद करो तो मैं अपनी भी बात करूं।" माधवी की इस बात पर दोनों नयी दोस्त हँस पड़ी और इसके बाद तो दोनों में काफी बातें हुई।

एक दूसरे के परिवारों की, मुहल्ले वालों की और दुनियाभर की बातें। कुछ क्षणों की खामोशी के बाद पूजा ने माधवी से कहा "माधवी तुम जानती हो, मैंने तुम्हारा कमरा तुम्हारे साथ रहने के लिए क्यों चुना? वह इसलिए कि हमारा कमरा नंबर 13 है। लोग भले ही कुछ भी बोलें, कुछ भी कहें, कुछ भी मानें, मैं तो इन अंधविश्वासों में बिल्कुल भी विश्वास नहीं रखती। मैं 13 नंबर तो क्या किसी भी नंबर के कमरे में रहना पसंद करूंगी। तुम नहीं मानोगी, मैं अमावस्या, सूर्यग्रहण, पूनम या ऐसे किसी भी दिन को कोई भी काम करती हूँ, जिसे आम तौर पर करना लोग पसंद नहीं करते।" माधवी ने भी पूजा को जताया कि वह भी इन अंधविश्वासों में जरा भी विश्वास नहीं रखती। वे दोनों एक दिन के संपर्क में ही एक दूसरे की अंतरंग सहेलियाँ बन गईं।

शाम को कक्षा से छूटकर उन दोनों सहेलियों ने अपना सामान अच्छे तरीके से सजाया। माधवी ने अपने पढ़ने की मेज पर गणेशजी की मूर्ति रखी और कहा "पूजा, माँ ने मुझे यहाँ आते समय यह मूर्ति दी थी और कहा था कि इसे हमेशा अपने पास रखना। मैं तो कभी-कभी भगवानजी के मंदिर भी जाया करती हूँ।"

पूजा ने कहा, "इसमें कोई गलत बात नहीं। तुम ठीक ही कह रही हो। आप किसी भी भगवान में या दैवी शक्ति में विश्वास रख सकते हो। उन्हीं में विश्वास ही आपके मनोबल को मजबूत करता है और आपको आगे की लड़ाई के लिए तैयार भी करता है। प्रार्थना ही पूंजी है, एक शक्ति है। प्रार्थना तो ईश्वर से सीधी बात करने का जरिया है और प्रार्थना से ही आप ईश्वर से सीधा संवाद करते हो।"

तभी पूजा ने माधवी को अपना विचार सुनाया "माधवी, आज हॉस्टल में हमारा पहला दिन है। अभी शाम के भोजन में एक घंटा बाकी है। क्यों न आज के दिन को याद रखने के लिए और कभी न भुलाने के लिए हम दोनों मंदिर ही हो आते हैं!!! भगवानजी से मिल आते हैं और इस बहाने शाम के समय थोड़ा टहलना भी हो जाएगा। इतना कह कर वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। दोनों ही जल्दी-जल्दी तैयार हो गईं। मंदिर पास में ही था। मंदिर में दर्शन कर दोनों हॉस्टल में वापस आ गई और भोजन भी कर लिया। रात में बड़ी देर तक दोनों ही बहुत बातें करती रहीं। घड़ी ने कब बारह बजा दिये वह दोनों को बातों ही बातों में पता ही न चला। अंत में दोनों सहेलियाँ बातें करती-करती निद्रादेवी की आगोश में खो गईं।

कॉलेज का वह पहला दिन था इसलिए दिनभर के व्यस्त कार्यक्रम से माधवी भी थक चुकी थी। रात के लगभग दो बजे वह पानी पीने के लिए उठी, उसे जोरों की प्यास लगी थी, जैसे ही उसने कमरे की बत्ती जलाई और क्या देखा कि पूजा के गले से खून बह रहा था। किसी ने पूजा का कत्ल कर दिया था और उसके गले से खून बह रहा था। यह भयानक दृश्य देखकर माधवी के मुँह से चीख निकल गई। एक पल के लिए माधवी की सांस ही रूक गयी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे और क्या न करे? एक अच्छी-भली, मिलनसार और हँसमुख लड़की पूजा का किसी ने रात में ही कत्ल कर दिया था। माधवी के मन में कई विचार आने लगे थे। माधवी ने कमरे में किसी की आहट भी नहीं सुनी थी और न ही कोई आवाज़ उसके सुनने में आयी थी, फिर यह सब कैसे हो गया कि किसी ने इस बेरहमी से पूजा को मार दिया???

उसे कुछ भी सुझाई नहीं दे रहा था। अब वह क्या करे, वह बड़ी ही घबराहट में थी। माधवी ने सोचा, वह स्वयं तो अंधविश्वासों में विश्वास नहीं रखती। पूजा भी इसी विचार की थी। फिर किसी अंजान व्यक्ति ने किस कारण पूजा का कत्ल कर दिया था? क्यों? क्यों? वे दोनों ही 13 नंबर के कमरे में रहती थीं यह कहीं 13 नंबर का असर तो नहीं था?

माधवी की आँखों में आंसू थे। उसकी सहेली पूजा अब इस दुनिया में नहीं थी। उसे अजनबी कातिल पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। माधवी को लगा कि अब वह कुछ भी नहीं कर पाएगी। उसकी आँखों से लगातार अश्रु की धारा बह रही थी।

तभी किसी के चिल्लाने की आवाज आयी "माधवी! जल्दी उठो। आठ बज चुके हैं। जल्दी से तैयार हो जाओ, हमें आज जल्दी कॉलेज जाना है, डीन का लेक्चर है।"

उसने देखा सामने पूजा खड़ी थी और उसे नींद से जगा रही थी। वह एक डरावना सपना था। सचमुच डरावना और भयावह..............

***

कहानी

- **मन विनायक शुक्ल**

31 दिसंबर की रात, हर तरफ उल्लास, घड़ी की सुई जैसे ही बारह पर गई मानो पूरा शहर झूम रहा था। ज्योति को पता नहीं था अगली सुबह उसके लिए क्या ले कर आने वाली है। 31 दिसंबर को चलने वाली पार्टी के मस्त-मौला शोरगुल और तेज संगीत भी शायद उसके हृदय में चल रहे तूफान की हलचल को शांत नहीं कर पा रहे थे। जिन्दगी में इतने सारे इम्तहानों और तूफानों में भी शायद इतनी ऊर्जा नहीं थी कि वह उसके अडिग आत्मविश्वास को हिला सकें लेकिन कल के मुकद्दमे के फैसले को लेकर वह इतनी बेचैन क्यों है? क्या वह उसके जीवन का पहला मुकद्दमा है इसलिये, या यह मुकद्दमा वह इलाहाबाद उच्च न्यायलय के सबसे बड़े वकील के खिलाफ लड़ रही है या इसलिये इस बार उसका आत्मविश्वास जवाब दे रहा है और उसको अपनी जीत पर उतना भरोसा नहीं है या इसलिये कि जीवन में वह कभी हारी नहीं और हार को बर्दाश्त करने की कला उसके जीवन ने उसको नहीं सिखायी। ज्योति को पता नहीं है कि उसका मन आज इतना उद्दिग्न क्यों है कल के फैसले के पहले आज वह थोड़ा आराम करना चाहती है। इसलिये अपने मित्रों को ठीक बारह बजे अलविदा और नववर्ष की शुभकामनाएं प्रेषित कर अपने घर की ओर चल दी।

कार मैं बैठकर वह अपने घर की तरफ जा जरूर रही थी पर आज उसका मन मानो पूरे वेग से भागकर भविष्य और भूत के बीच की खाई को भरना चाहता था। इस दौड़ में उसका वर्तमान स्तब्ध था और मूक दर्शक बन सिर्फ टिक-टिक करते हुए बढ़ते समय को देख रहा था। ज्योति को लग रहा था कि क्या उसने बंद मिलों के मजदूरों के केस को ईमानदारी से लड़ा है? क्या वह इससे अच्छी दलीलें दे सकती थी? क्या उसकी पढ़ाई सच में मजदूरों को न्याय दिला पायेगी या नहीं। उसका दिल मानो बैठा जा रहा था। उसको रह-रह कर बुंदिया और उसके बच्चों का ख्याल खाये जा रहा था। किस तरह से बुंदिया ने सारे बस्ती वालों को राजी किया था कि ज्योति मेमसाब हम सब मजदूरों का केस बड़े साहब लोगों के खिलाफ लड़ेंगी। यह सब बातें याद आते ही उसकी आंखें डबडबा गयीं। इतने में घर भी आ गया। घर में आने पर पिताजी ने दरवाजा खोला और दरवाजे पर खड़ी ज्योति के चेहरे को देखकर उसकी मन:स्थिति को पूरी तरह भाँप गये। ज्योति के पापा हरीश भी इलाहाबाद हाईकोर्ट में मुंशी रह चुके थे और उन्होंने वकीलों के दाँव-पेंचों को कचहरी और कचहरी के बाहर बहुत करीब से देखा था। उन्होंने प्यार से ज्योति की पीठ थपथपाते कहा:-

हरीशः बेटा जल्दी आ गई। क्या पार्टी में अच्छा नहीं लगा?

ज्योतिः नहीं पापा बस। थोड़ी थकान लग रही थी और कल कोर्ट में निर्णय भी आना है।

हरीशः (मुस्कराते हुए) तो मेरी बिटिया डरी हुई है।

ज्योतिः नहीं पाप ! डरी नहीं उत्सुक हूँ।

हरीशः (हँसते हुए) अरे मैं तुम्हारा पापा हूँ और जानता हूँ कि तुम डरी हो या निर्णय के लिए उत्सुक हो। मेरे ख्याल से तुम्हें कल के निर्णय की चिंता छोड़ आराम करना चाहिए। वैसे भी तुमने इस केस के लिए रात-दिन एक कर दिया। कहाँ-कहाँ नहीं घूमी, ना खाने का ध्यान ना पीने का। देखो अपना क्या हाल किया है। अरे अब तो मेहनत के फल का समय है, खुश रहो।

ज्योतिः आप ठीक कहते हो पापा। पर क्या मैं जीतूंगी?

हरीशः तुम नहीं सच की जीत होगी और सच तुम्हारी तरफ है।

ज्योतिः(हंसकर) पापा 2012 में 1950 के आदर्श नहीं चलते। आज हर तरफ हर चीज बिकती है बस खरीददार होना चाहिए। आपको तो पता ही है कि चोपड़ा इंडस्ट्रीज और सीनियर एडवोकेट मिस्टर माथुर यहाँ खड़े-खड़े किसी को भी खरीद सकते हैं।

हरीशः किसी को भी??

ज्योतिः हाँ किसी को भी।

हरीशः तो फिर तुम क्यों नहीं बिकी? तुम्हें भी तो 10 लाख का ऑफर मिला था।

इस प्रश्न से तो मानो ज्योति के मन में एक बिजली सी कौंध गयी। मैं क्यों नहीं? 10 लाख कम रकम तो नहीं थी। मैंने क्यों मना किया। ज्योति के पास अपने पापा का कोई जवाब नहीं था। वह बस मुस्करा कर सोने चली गयी।

ज्योति की आँखों में नींद कहाँ थी। उसके मस्तिष्क पटल पर तो बस पिछले सालों की घटनायें झाँकी बनकर छा रही थीं। उसको ऐसा लग रहा था कि मानो कल की ही बात है कि एक अच्छे शिक्षण कैरियर के बाद उसने दिल्ली विश्वविद्यालय के लॉ कोलेज से कानून की परीक्षा प्रथम स्थान से पास की थी। पापा का सपना सच किया था। वह वकील बन गयी थी। पापा के कहने पर उसने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अभ्यास शुरू कर दिया था। कुछ छोटे बड़े मुकदमों में उसने जीत भी हासिल की थी। उसका उत्साह भी दिन-दूना रात-चौगुना बढ़ कर रहा था। न्यायालय के वकील उसकी कुशाग्र बुद्धि और वाक् पटुता का धीरे-धीरे लोहा मानने लगे थे। ज्योति के पापा हमेशा उसे याद दिलाते रहते थे कि अच्छे वकील का काम न्याय दिलाना है न कि अन्याय को बढ़ावा देना। ज्योति भी अपने पिता के आदर्शों को अपना गुरु और मार्गदर्शक मान कर आगे बढ़ रही थी, लेकिन ज्योति के जीवन के मौसम ने भी करवट और एक दिन बुंदिया जो कि उसके घर पर काम करने आती थी, को एक झंझावत का दूत बनाकर भेजा।

उस दिन बुंदिया बहुत दुःखी थी और ज्योति के घर आकर बोली कि वह अगले दिन से किसी दूसरे शहर में जा रही है। ज्योति ने पूछा कि क्या बात है? बुंदिया ने बताया कि जिस बंद मिल की जमीन पर वे लोग रहते हैं उस पर बड़े साहब लोगों को कुछ स्टे मिल गया है और वे हम लोगों को भगा रहे हैं। ज्योति ने उसको धैर्य रखने को कहा और भरोसा दिलाया कि उन लोगों की जगह उनसे नहीं छीनी जायेगी। बाद में ज्योति ने जब पूरे केस की छानबीन की तब उसे पता चला कि चोपड़ा इंडस्ट्रीज की बंद मिल को कम्पनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के दिवालिया घोषित होने के कारण बेचने की प्रक्रिया शुरू की गयी है। उसने बुंदिया को भरोसा दिलाया कि वह उन लोगों का केस उच्च न्यायालय में लड़ सकती है।

बुंदिया का पति उसी मिल में काम करता था और एक बीमारी के कारण चल बसा था। बुंदिया ने बाकी बेकार और बेरोजगार मिल मजदूरों को समझाया और उनके हस्ताक्षर लेकर उनको केस की पार्टी बनाया। कड़ी सर्दी और छोटे-छोटे बच्चों को लेकर बुंदिया रोजी-रोटी भी चलाती थी और मिल मजदूरों को भी समझाती थी। कुछ मिल मजदूर तो शराब के नशे में उसको गालियाँ भी देते थे और अश्लील हरकते करने का प्रयास भी करते थे। ज्योति ने कितनी बार उसके साथ जाकर उसको उन सबसे बचाया था। उन मिल मजदूरों की दयनीय दशा और विशेषकर बुंदिया की स्थिति देख ज्योति का दिल ठहर सा जाता था, किन्तु बुंदिया की लगन और मिल मजदूरों की उसके प्रति बढ़ती आस्था ने उसके इरादों को बुलंद कर दिया था।

ज्योति ने चोपड़ा इंडस्ट्रीज के विरूद्ध केस फाइल कर दिया। तारीखें और सुनवाईयाँ शुरू हो गयी। मिस्टर माथुर उच्च न्यायालय के सबसे बड़े और नामी वकील थे। उनके बारे में मशहूर था कि वे जो चाहते थे जज वही निर्णय करता था। उनके पैतरों के सामने ज्योति धीरे-धीरे धराशायी नजर आने लगी थी। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि चोपड़ा ब्रदर्स उस बंद मिल के मालिक है और दिवालियेपन की स्थिति में कम्पनी एक्ट के तहत बंद कम्पनी और उसकी सारी संपत्ति को बेच कर अपना कर्ज चुका सकते हैं और बाकी की भी उनका कानूनी हक होगा। इस तरह से मजदूरों के हाथ उनके रहने की जमीन और उनकी अनुग्रह राशि सब जा रही थी। उस बहस के बाद अगली तारीख एक हफ्ते के बाद की थी। ज्योति ने उस एक हफ्ते दुनिया से अलग अपने आपको एक कमरे में बंद कर लिया और कानून की किताबों के समंदर में डुबकी मार रही।

एक हफ्ते बाद रूम के बाहर चोपड़ा इंडस्ट्रीज का प्रतिनिधि उससे बोला- "उम्मीद है कि आज आप के पास बहस करने को कुछ नहीं होगा, फिर भी हम लोग आपको बहस न करने के 10 लाख देने को तैयार हैं।" ज्योति की भृकुटियां देख वह जवाब समझ गया।

कोर्ट रूम में आज ज्योति ज्योतिमान हो रही थी। आज उसके चेहरे पर मेहनत, आदर्श और ईमानदारी की आभा कान्तिमान हो रही थी। आज उसने बहस का ब्रहमास्त्र छोड़ा था। उसने कम्पनी के बंद होने से उस दिन तक के समय तक मजदूरों का वेतन, सुख-सुविधायें और सब चीजों को जोड़ कर हिसाब लगाया कि उन पैसों के हिसाब से मजदूरों का उस मिल के 60% शेयरों पर हक है और वास्तव में सारे मजदूर उस मिल के मालिक हैं अतः मिल को संपत्ति की बिकने की दशा में, सारे कर्जे चुकाने के बाद, बाकी की रकम मालिक के तौर पर मजदूरों को मिलनी चाहिये। बहुत सारे तर्क और कानूनों के हवाले देकर उसने अपनी दलीलों की पुष्टि की। जज भी वाह-वाह कहे बिना रह नहीं पाया और मिस्टर माथुर से बोला कि क्या आपके पास इसका कोई प्रत्युत्तर है। मिस्टर माथुर सर झुकाकर नीचे बैठ गये। जज ने एक जनवरी को निर्णय की तिथि नियत की।

आज एक जनवरी की सुबह ज्योति मिल मजदूरों के साथ कोर्ट पहुंची। लेकिन कोर्ट के बाहर ही मिस्टर माथुर ने उसको रोककर हाथ मिलाया, शाबासी दी और प्रार्थना की कि उनके कैरियर में हार का दाग लगने से बचा ले। मिल मालिक मजदूरों की सारी मांगें मानने को तैयार है, बशर्ते मजदूर कोर्ट के बाहर समझौता कर लें। वर्षों की मेहनत नये साल में नया संदेशा लायी।

***

गुस्सा अच्छे-भले आदमी को भी विवेकहीन बना देता है

- जितेन्द्र खर्डे,

<u>एससीटीडी/एसएनएए</u>

पुराने समय की बात है। एक राजा को पक्षी पालने का बड़ा शौक था। उसके पास तरह-तरह के पक्षी थे, जिनसे उसे बहुत ही लगाव था। उनमें से एक बाज राजा को बहुत ही प्यारा था। राजा उसे हरदम अपने ही साथ, हाथ या कंधे पर बैठाकर रखता था। राजा कहीं भी जाता था तो बाज हरदम अपने साथ ही रखता था।

एक बार राजा जंगल में शिकार के लिए गया। राजा का घोड़ा उसके अन्य साथियों से कहीं अलग दिशा में निकल गया। वह इधर-उधर भटकने लगा, क्योंकि उसे कोई नजदीक दिखाई नहीं दे रहा था। वह रास्ता भी भूल गया था। उसे दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आ रहा था।

बहुत समय बीत जाने से उसे बड़ी प्यास भी लगी थी। वह पानी की तलाश में इधर-उधर भटक ही रहा था कि उसे एक जगह पर दो पत्थरों के जोड़ के बीच से कुछ पानी टपकता हुआ नजर आया। राजा को तो बड़े जोर से प्यास लगी थी। उसने तुरंत गिलास निकाला और उस टपकते हुए पानी के नीचे रख दिया। कुछ ही समय में गिलास भर गया।

राजा ने गिलास उठाया और जैसे ही पानी पीने को हुआ तो कंधे पर बैठा बाज एकदम से उड़ा। अचानक उड़ने के कारण बाज का पंख लगने से पानी से भरा गिलास जमीन पर गिर गया। राजा को बाज पर बहुत गुस्सा आया, लेकिन फिर से उसने गिलास उस टपकते पानी के नीचे भरने के लिए रख दिया। थोड़ी ही देर में गिलास फिर से पानी से भर गया। राजा जैसे ही गिलास को अपने होठों से लगाने गया, बाज ने फिर से गिलास को नीचे गिरा दिया। अब राजा गुस्से से तिलमिला उठा और गुस्से में आकर उसने कुछ भी बिना सोचे-समझे बाज की गरदन मरोड़ कर उसे मार डाला।

बाज को मार कर नीचे फेंकते हुए उसने उन पत्थरों के बीच की दरार में देखा जहां से पानी टपक कर नीचे की ओर आ रहा था। तो वहां पर एक साँप मरा हुआ पड़ा था और उसमें से पानी टपक रहा था। अब राजा समझ गया कि बाज क्यों पानी गिरा देता था। अब उसे बहुत दुःख हुआ। मैं मर ना जाऊं इसलिए बाज बार-बार पानी गिरा देता था। यह बात उसकी समझ में आई, लेकिन पश्चाताप के सिवाय उसके पास अब कोई और विकल्प नहीं था।

इसलिए गुस्सा एक ऐसा दुर्गुण है, जो किसी भी आदमी का विवेक छीन लेता है, जिससे विवेकहीन आदमी अपने हितेच्छुओं का भी शत्रु बन जाता है और यहां तक कि उसकी जान भी ले सकता है। अतः गुस्से पर योग्य नियंत्रण रखना सिर्फ जरूरी ही नहीं परम आवश्यक भी है।

***

जवान

- **प्रणेश कुमार**

अनीता आज बहुत खुश थी, कुछ ही दिनों पहले उसकी मुलाकात रवि से हुई थी। पहली बार उसके अंधेपन को नजरअंदाज करते हुए उसे किसी ने चाहा था। आज पहली बार वह रवि के घर आयी थी। परंतु उसे ऐसा क्यों लग रहा था कि रवि पहले से विवाहित है। तभी एक आवाज सुनाई दी और अनीता कांप उठी !!! पापा ! मेरी बॉल गुम गई। पापा, पापा ! और रवि उठकर आवाज की दिशा की ओर गया।

अनीता के मन में जैसे सैकड़ों अनुत्तरित प्रश्न पतझड़ में बिखरे हुये सूखे पत्तों की तरह इधर-उधर उड़ने लगे। तो क्या रवि सचमुच में शादीशुदा है? क्या उसकी कोई पत्नी भी है? और सबसे अहम बात, क्या रवि ने उसे धोखा दिया है? और भी न जाने कितने सवाल !

पर वह भी तो बहुत बड़ी बेवकूफ है। क्यों नहीं उसने रवि से सीधे-सीधे पूछ लिया इस बारे में। कम से कम इस बात की तसदीक़ कर लेती तो अपने मन में रवि के लिये कोई भावना पलने ही नहीं देती। चाहे कितना भी प्यार जताये कोई मर्द, पर क्या कोई औरत दूसरी बनकर रहना पसंद करेगी उसके लिए? भला शादीशुदा मर्द को पसंद करने वाली औरतों का कोई मान रहता है?

रवि की आवाज से अनीता की तंद्रा टूटी। "अरे अनीता ! सोनू से मिलो। बड़ा शैतान है यूँ तो, पर अजनबियों के सामने इसकी घिग्घी बंध जाती है। बेटा ! आँटी को प्रणाम करो" रवि ने जैसे सोनू से अनीता का परिचय करवाया।

अनीता की तो हालत ही अजीब थी। ऐसा लग रहा था जैसे आसपास की दीवारें, फर्नीचर सब उसके चारों ओर चक्कर काट रहे हैं। उसका मस्तिष्क कहीं और ही घूम रहा था। अलग-अलग भाव आ रहे थे चेहरे पर।

"नमस्ते आंटी" कि तभी बड़ी ही मासूम-सी आवाज ने अनीता को जैसे वर्तमान में ला दिया। उसने अनुमान लगाया कि 4-3 साल की उम्र का होगा सोनू।

"बेटा, बड़ों को पैर छूकर प्रणाम करते हैं। और फिर अनीता आंटी तो आंटी हैं ना" रवि ने सोनू को समझाने वाले अंदाज में कहा।

"प्रणाम आंटी" अनीता ने अपने पैरों पर दो नन्हे हाथों का स्पर्श महसूस किया। पता नहीं ये स्पर्श का जादू था या स्वर की मासूमियत या फिर किसी अलौकिक शक्ति का प्रभाव, अनीता ने उसे उठाकर हृदय से लगा लिया। सारे सवाल जो अभी तक इधर-उधर मन के किसी कोने में घूम रहे थे, पता नहीं कहाँ विलीन हो गये।

"सोनू बेटा ! आप जाओ अपनी गेंद के साथ खेलो। तब तक मैं आंटी को हमारा घर दिखाता हूँ।" रवि ने कहा तो अनीता की गोद से उतर कर सोनू बाहर चला गया। "चलो अनीता, हम तुम्हें अपने राजमहल से परिचय कराते हैं" रवि ने वातावरण को थोड़ा हल्का बनाने के उद्देश्य से जैसे कहा।

अनीता उठकर खड़ी तो हुई अपनी जगह से। पर सोनू के जाते ही फिर वहीं सवाल उत्तर की प्रतीक्षा में दिमाग पर छा गये। क्यों नहीं वह सीधे-सीधे रवि से सब पूछ लेती है। नहीं-नहीं, अभी नहीं। रवि खुद क्यों नहीं समझ सकता कि वह कुछ पूछना चाहती है।

"मैं समझता हूँ...." रवि ने कहा तो अनीता को लगा जैसे रवि ने उसकी नब्ज पकड़ ली हो। अनीता घबड़ा सी गई जैसे कि उसकी चोरी पकड़ी गई हो। "मैं समझता हूँ कि तुम्हें बोर लग रहा होगा यहाँ आकर, घर में सिर्फ मैं और सोनू रहते हैं और एक टॉमी - हमारा कुत्ता। सब कुछ अस्त-व्यस्त सा पड़ा रहता है। मैं सुबह होते ही नहा-धोकर सोनू को स्कूल छोड़ता हूँ। फिर अपने क्लीनिक पर चला जाता हूँ और आजकल तो भीड़ इतनी होती है कि रात 8 बजे से पहले घर वापस आ भी नहीं पाता। बीच में एक बार सोनू को लेने स्कूल जाता हूँ। सोनू के लिए बिल्कुल भी समय नहीं है मेरे पास। मैं कोशिश करता हूँ कि उसे माँ की कमी महसूस न हो पर सब कुछ तो हो नहीं सकता ना" रवि कहता रहा और अनीता सुनती रही। घूमते हुए दोनों लॉन में जाकर बैठ गये।

"मैं चाय बना कर लाता हूँ" रवि ने कहा तो अनीता ने मना करना चाहा। पर जब तक कुछ कहती रवि उठकर जा चुका था।

तो क्या रवि की सचमुच की शादी हो गयी है? क्या सोनू रवि का अपना ही बेटा है। यही सब सोचते हुए अनीता अपने खयालों में खो गई। रवि चाय बनाकर ले भी आया। चाय पीते हुए दोनों इधर-उधर की बातें करते रहे। शाम होने से पहले अनीता ने रवि से घर छोड़ने की बात कही तो रवि तैयार हो गया। घर छोड़ते हुए रवि ने एक कैसेट अनीता के हाथों में थमाया। "मेरा फेवरिट है, जरूर सुनना"।

वापस आयी तो अनीता का मन जैसे उचट सा गया था। एक पहले से विवाहित मर्द और वह उसके साथ कैसे रहने की सोच सकती है। खाना खाने का मन भी नहीं हो रहा था उसका इन्हीं विचारों में खोयी थी कि अचानक ध्यान आया, रवि ने एक कैसेट दिया था। प्लेयर में लगा कर ऑन किया और लेटकर सुनने लगी।

"प्रिय अनीता..........." अनीता चौंक पड़ी। तो क्या रवि उससे कुछ कहना चाहता है?

मुझे पता है, तुम क्या सोच रही हो। यही कि रवि किसका बेटा है। रवि मेरा ही बेटा है। चौंकना मत, मैंने इसे जन्म तो नहीं दिया पर इससे अलग होना मेरे लिए ऐसा है जैसे एक बाप का अपने खुद के बेटे से। यह मेरी बड़ी बहन, सीमा का इकलौता बेटा है। इसके जन्म में कुछ जटिलतायें थीं। डाक्टरों ने कहा ऑपरेशन ही एक मात्र चारा है। सीमा को पता था कि उसकी जान को खतरा हो सकता है फिर भी उसने सोनू को इस दुनिया में लाने के लिए अपनी जान की बिल्कुल भी परवाह नहीं की। बहुत ज्यादा खून भी बह चुका था। हम सबको डर लग रहा था पर सीमा बहादुर निकली।

अंत समय में उसने मुझे बुलाकर कहा था - "रवि ! मुझे पता है कि तुम्हारे अभी शादी करके घर बसाने के दिन हैं। तुम्हारी पत्नी शायद तुम्हारा प्यार बाँटने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं होगी। पर मुझे सोनू के लिए तुमसे बेहतर कोई नहीं दिखता। अगर अजय का एक्सीडेंट नहीं हुआ..........." रवि बीच में रुका, "अरे अनीता, मैं तुम्हें बताना भूल गया, अजय यानि कि सीमा के पति की कार दुर्घटना में सिर्फ तीन महीने पहले ही मौत हो गयी थी और तब से मैं सीमा के घर रह रहा हूँ। ....सीमा ने मुझसे वचन लिया था कि जब तक सोनू बड़ा नहीं होता, मैं उसकी देखभाल करूं।

"और अब तो मुझे उसके बिना दुनिया ही अधूरी लगती है। अगर मुझे माफ कर सको और मेरे प्यार पर भरोसा कर सको तो क्या मेरे और सोनू के साथ अपना बिताना चाहोगी?" अनीता को जैसे सारे जवाब मिल गये। वह उठी और किसी से बात करने के लिए फोन पर एक नंबर डायल करने लगी। घर के बाहर खेलता सोनू अब उसे अपना बेटा लगने लगा था।

***

<u>संघ की राजभाषा नीति से संबंधित अति महत्वपूर्ण बिंदु</u>

- राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत सभी 14 प्रकार के दस्तावेज अनिवार्य रूप से द्विभाषी (हिंदी एवं अंग्रेजी) रूप में जारी किए जाएं। यदि इस अधिनियम का उल्लंघन होता है तो दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को उत्तरदायी ठहराया जाएगा।
- राजभाषा नियमावली, 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिए जाएं।
- हिंदी पत्राचार को बढ़ावा दें। विभिन्न क्षेत्रों के लिए निर्धारत लक्ष्यानुसार हिंदी में पत्राचार करें और क एवं ख क्षेत्र को भेजे जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते हिंदी में ही लिखें।
- मात्र द्विभाषी रबर मुहरों का ही प्रयोग करें।
- हिंदी में कार्य करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है। हम स्वयं हिंदी में काम करें और दूसरों को भी हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करें।

***

समय मानो थम सा गया था.........

- डी.सी.मेहता

कल तक जो वक्त बिजली से भी तीव्र गति से निकला, आज वह एकदम स्थिर क्यों है? रमेश बिना पलक झपकाए स्तब्ध होकर सोचने लगा। अचानक यह क्या हो गया? उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। जो सुना उसे मन स्वीकार नहीं कर रहा था।

15 जनवरी की शाम हो चुकी थी। रविवार का दिन था। 14 जनवरी, शनिवार को मकर संक्रांति का त्योहार मनाया था। हवा कम होने से पतंग उड़ाना आसान नहीं लग रहा था, लेकिन रविवार को अच्छी हवा ने खुश कर दिया। देर शाम-तक छत पर पतंग उड़ाने के बाद बच्चों के साथ नीचे घर में आकर बैठा तो रोहित का फोन आया कि वह परिवार के साथ बाघा सरहद जाकर आ गया है। स्वर्ण मंदिर, अमृतसर में स्थानीय त्योहार की भीड़ होने से दर्शन आज नहीं कर पाया। सोमवार का एक दिन है तो दर्शन कर लेगा और मंगल को गाड़ी से वापस अहमदाबाद रवाना हो जाएगा।

रोहित सपरिवार 3 दिन की छुट्टियों में अमृतसर घूमने गया था। परिवार में पत्नी नीता और दो बेटे - हरित एवं ध्रुव थे। अमृतसर में इस वर्ष बारिश के कारण ठंड बहुत थी लेकिन रोहित को तो विपरीत स्थितियों का सामना करने में मज़ा आता था। रमेश को रोहित के फोन पर बाघा बोर्डर घूमने के समाचार और सबकी खुशहाली जानकर अच्छा लगा। एक ही दिन का सवाल था। मंगल को तो वापसी थी। यही सोचते-सोचते रात का खाना खाकर टीवी देखने बैठा था।

रात को करीब नौ बजे रोहित के भाई पीयूष का फोन आया। उसे बोलने में दिक्कत हो रही थी। इतना ही समझ में आया कि अमृतसर में रोहित को कुछ हो गया है और पीयूष अपने एक सहकर्मी के घर बैठा है। रमेश ने टीवी बंद करके फोन घुमाने चालू किए। रोहित का फोन कोई उठाता नहीं था। बच्चों के नंबर थे नहीं।

सबसे पहले रमेश कैसे भी करके पीयूष को अपने घर ले आया। उसका परिवार भी रविवार होने के कारण साथ नहीं था। बाद में सबको अपने घर बुलवा लिया। रोहित का बड़ा बेटा हरित बात करने की स्थिति में नहीं था। छोटा बेटा ध्रुव फिर भी थोड़ा स्वस्थ था। उसने बताया कि वे सब अमृतसर की गुरू गोविंदसिंह सराय में थे। खाना खाकर बैठे ही थे कि रोहित पानी लेने नीचे गया और वहाँ क्या हुआ, कुछ पता नहीं। देर हुई तो नीचे देखने गए, तो वहाँ थोड़ा हंगामा हो रहा था। भीड़ के पास जाकर देखा तो रोहित गिरा पड़ा था। सराय के कर्मचारी ढूँढ़ने की कोशिश कर रहे थे कि इनका परिवार कहाँ है।

सब मिलकर रोहित को नजदीकी अस्पताल में ले गए। डॉक्टर ने नब्ज पकड़ते ही बोल दिया 'ही इज़ नो मोर'। सुनते ही परिवार के तो होश उड़ गए। अनजानी जगह पर, कड़ाके की ठंड और बरसाती मौसम में भी सबके पसीने छूटने लगे। आगे क्या करे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। इतनी बात होने पर ध्रुव भी सुस्त पड़ गया था। रमेश ने उसे ढ़ढास बंधाते हुए कह दिया, "तू चिंता मत कर, कुछ नहीं होगा। हम सब संभाल लेंगे। तुम सब वहीं रहो, आगे का हम देखते है।"

तीन घंटे भी नहीं हुए थे कि पूरा दृश्य ही बदल गया था। किसको पता 13 जनवरी की शाम को रोहित के साथ यह आखिरी मुलाकात थी और थोड़ी देर पहले फोन पर हुई बात उससे हुई आखिरी बात थी। सोचने का समय नहीं था। दिल का दौरा पड़ा था या बेन हैमरेज हुआ था- कुछ पता नहीं। फिलहाल तो नीता और दोनों बच्चों को संभालना सबसे कठिन कार्य था। अमृतसर खराब मौसम में पहुँचना भी मुश्किल था। फिर रात भर तीनों को किसके भरोसे रखा जाए। फोन घुमाने चालू हुए। घर में जो भी सगे-संबंधी आए थे, सब अपने-अपने पहचान वालों से अमृतसर के संपर्क ढूढ़ रहे थे। रमेश ने अपने चंडीगढ़ में रहने वाले सहकर्मी को मामला बताया। दस-पंद्रह मिनट में अमृतसर से अमित माथुर का फोन आया जो कि उस सहकर्मी के साले थे।

अमित: "रमेशजी, मुझे ये बताएं कि रोहित का परिवार कहाँ ठहरा है और उनका संपर्क नंबर क्या है?"

रमेश : जी अमितजी, रोहित का परिवार गुरू गोविंदसिंह सराय में ठहरा है और आप रोहित के छोटे बेटे ध्रुव का नंबर नोट करें। उसका नंबर ....है।"

अमित: जी, आप बिल्कुल फिक्र न करें। ये लोग मेरे परिवार के ही सदस्य की तरह हैं। मैं सब देख लूंगा और आपसे संपर्क करूँगा।"

इस बीच पीयूष ने अपने बैंक के अमृतसर शाखा के वरिष्ठ प्रबंधक इकबालसिंह को भी इस घटना के बारे में सूचना देते हुए मदद करने हेतु गुहार लगाई। इकबालसिंह ने पूरा भरोसा दिखाया और वे तुरंत अस्पताल पहुँचे। अमित माथुर जब तक सराय पहुँचते (यह सब रात को 12 से 1 बजे के समय की बात है) इकबालसिंह और उनकी पत्नी नीता सराय से हरित और ध्रुव को अपने घर ले जा चुके थे।

इकबालसिंह और अमित माथुर दूसरे दिन सुबह से शाम तक रोहित का शव अस्पताल से लेकर शवपेटी में रखकर हवाई मार्ग से भेजने का प्रबंध करने में लगे रहे। शाम को अमृतसर में तकनीकी कारणों से हवाई टिकट रद्द कर दिया गया, तब इकबालसिंह और अमित माथुर ने शववाहिनी का प्रबंध करके तीनों को रोहित के पार्थिव शरीर के साथ दिल्ली भेज दिया। दिल्ली से सुबह 6 बजे फ्लाइट थी। अहमदाबाद से भी 16 की रात को ही दो लोग दिल्ली पहुँच गए थे। 17 की सुबह जो रोहित मुसाफिर बनकर अमृतसर गया था, कार्गो-सामान बनकर वापस लौट आया था।

समय इतना जल्दी चला गया कि पता ही नहीं चला, लेकिन अंतिम संस्कार के पश्चात् अब शाम को जब रमेश अकेला बैठा था तो लग रहा था मानो समय थम-सा गया है। कल तक जिस रोहित की वापसी उम्मीद में थे। आज चारों ओर केवल निराशा की कालिमा छायी हुई थी।

***

अंतर्मन

सोनू जैन

तुमने मेरी परिणति की सारी परतों को देखा है
अन्दर बहती निर्मल धारा तो अब भी अनदेखी है।

बार-बार मूल्यांकन क्यों मेरी छाया का होता है,
मेरा अन्तर्मन अब भी तेरी दृष्टि से अनदेखा है।

क्रोध धृष्टता के भावों का किया आज तक लेखा है,
स्नेहिल अन्तस्तल ओझल जिसका कण कण भीगा है।

मानव भी है आज कर रहा निर्णय तिलक हमामा से,
चित्त द्वेष से भरकर करता न्याय स्वपर का असि*धारा से।

दोष नही मैं देता तुमको शायद यही मनुज की गति है,
किन्तु निवेदन इतना ही प्रिय वेदन तुममें भी वैसा है।

राग-द्वेष सामान्य भाव तो, सबके मन में इक जैसा है,
अन्तर्धारा के बल से तुमने, क्या नेह अन्य में देखा है ?

॥ इति।।

*तलवार

एक पत्र भगवान को

- जितेन्द्र खर्डे,
एससीटीडी/ एसएनएए

मेरे प्रिय भगवान,

आपको सादर प्रणाम,

मैं आपके अति से अति भव्य मंदिर के सामने ही एक सरकारी पाठशाला में सातवीं कक्षा में पढता हूँ। मेरे पिता यहाँ से थोड़ी ही दूरी पर स्थित बाज़ार में मेहनत-मजदूरी का काम करते हैं। मेरी मां भी हर रोज आसपास के घरों में काम पर जाती है। मैं पाठशाला क्यों जाता हूँ, मेरे माता-पिता को इसका कोई ज्ञान नहीं है। शायद छात्रवृत्ति में कुछ पैसे मिलते हैं और वहाँ मध्याह्न भोजन की व्यवस्था होने से वे मुझे और मेरी छोटी बहन को हर रोज पाठशाला में धकेल देते हैं।

हे भगवान, मैंने सुना है कि आप बड़े दयालु है और सबकी सच्ची बातों को सुनते हो और उनका सही समाधान भी करते हो। हमारे मास्टरजी ने भी हमें यही सिखाया है। इसलिए इस पत्र के द्वारा मैं आपको कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ। मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि आप मेरे प्रश्नों को जरूर सुनेंगे और उनका सही समाधान भी करेंगे।

प्रश्नः1 - मैं हर सुबह पाठशाला और शाम को नियमित तेरे मंदिर आता हूँ, पर हे भगवान, तेरा मंदिर तो अति भव्य है, जो पूरी तरह विदेशी आरस के पत्थरों से बना है तथा वातानुकूलित भी है। लेकिन मेरी पाठशाला के ऊपर तो सही छत भी नहीं है। हर बरसात में पानी टपकता रहता है। ऐसा क्यों है?

प्रश्नः2 - तुझे रोज 32 प्रकार के पकवान परोसे जाते हैं। हफ्ते में कई बार तो कितना ही दूध, दही, घी चढ़ाया अथवा तो बहाया जाता है, जबकि तू तो कुछ खाता ही नहीं है। यहाँ मुझे और मेरी बहन को रोज मध्याह्न भोजन में एक मुट्ठी चावल ही मिलता है, जिससे हमारा पेट भी नहीं भरता, दूध, दही और घी तो हमारे नसीब में है ही नहीं। ऐसा क्यों है?

प्रश्नः3 - मेरी बहन कितने ही दिनों से फटा हुआ फ्रॉक पहन रही है। मेरे पास भी कोई खास कपड़े नहीं है, जबकि तुझे तो रोज नये-नये रंगीन पहनावों से सजाया जाता है। सच कहूँ तो हे ईश्वर, मैं और मेरी बहन आपका यह श्रृंगार देखने ही मंदिर आते हैं, पर यहाँ इतनी असमानता क्यों है?

प्रश्नः4 - तेरे जन्म-दिन या किसी शुभ मौके पर लाखों की संख्या में लोग मंदिर आते हैं, लोगों को बड़ी ही मुश्किल से तेरे दर्शन नसीब हो पाते हैं, पर 15 अगस्त या 26 जनवरी के राष्ट्रीय दिवस पर हम बच्चों की दो-तीन महीनों की मेहनत से तैयार राष्ट्रगान या कोई प्रेरक कार्यक्रम देखने के लिए सिर्फ पाठशाला के बच्चे और शिक्षक ही रहते हैं। हे भगवान, तेरे मंदिर में चार-चार घंटे तक कतार में खड़े रहने वाले लोग मेरे मंदिर (पाठशाला) में क्यों नहीं आते?

प्रश्नः5 - आपको बुरा लगे तो लगे, पर मेरे गांव में हाल ही में एक पंचतारा होटल जैसा मंदिर बना है। पर एक मंदिर जैसे ही प्राथमिक स्कूल की मरम्मत करने की ओर किसी का ध्यान क्यों नहीं जाता है? हे ईश्वर, मैंने सुना है कि आप तो हमारी ही बनाई हुई मूर्ति हो, फिर भी इतना अधिक श्रृंगार क्यों है? और हमारा तो आपने स्वयं ही निर्माण किया है, फिर भी हमारे चेहरे पर वैसा नूर क्यों नहीं है?

हे भगवान, अगर संभव हो तो मेरे इन प्रश्नों के उत्तर त्वरित देना, जिससे मुझे मेरी वार्षिक परीक्षा में उपयोगी हो सकें। मुझे आगे बहुत पढ़ना है, डॉक्टर बनना है, लेकिन मेरे माता-पिता के पास न तो फीस के लिए पैसे है, न तो ट्युशन के लिए। अगर आप मेरी सहायता करना चाहते हो तो किसी श्रीमंत मंदिर की सिर्फ

एक दिन की दान-पेटी मुझे भेज दें, जिससे मैं और मेरी बहन सारी उम्र भर अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। आप जरा सोच कर देखो। मैं समझ सकता हूँ आप को भी किसी को पूछना पड़ेगा। किसी उच्च समिति की अनुमति भी लेनी पड़ सकती है, लेकिन अब समय बहुत ही कम है और मेरी वार्षिक परीक्षा भी नजदीक है। अगर आपने अभी मेरी ओर ध्यान नहीं दिया तो मेरे बापू मुझे तेरे मंदिर के सामने वाली होटल में प्रतिदिन पाँच रुपये के भव्य वेतन से नौकरी पर लगा देंगे। फिर बाद में समग्र जीवन भर मैं आपके श्रीमंत भक्तों को चाय पिलाता रहूंगा। तेरे साथ तो मेरी जीवन भर के लिए कट्टी हो जायेगी। हे भगवान, जल्दी कर, समय बहुत ही कम है तेरे पास और मेरे पास भी।

स्नेहाधीन

एक सरकारी पाठशाला का गरीब विद्यार्थी।

एक प्रेरणा स्रोत

✍ जीतेंद्र कुमार

रामेश्वर के तट पर
था अत्यन्त साधारण-सा घर
संघर्षों की मार थी,
पर नियति कुछ और थी ।
शिक्षा हेतु धन प्रचुर नहीं,
पर भगिनी ने कदम डिगने दिये नहीं ।

जो दिया अद्वितीय सहयोग,
तो पड़ी नींव इरादों की कठोर ।
कर प्राप्त उपाधि विमान-विधा की,
करी समर्पित सेवा एचएएल की,
फिर जुड़े साराभाई धवन जी से,
जो दूरदर्शी थे, अन्तरिक्ष तकनीकी के ।

निरन्तरता, लगन, परिश्रम
और समर्पण भाव से,
कर सफल एएसएलवी,
जोड़ा अध्याय नया,
भारत के तकनीकी, विकास में ।
बुनियाद बना जो,
पीएसएलवी, जीएसएलवी जैसे,
प्रक्षेपण यान बनाने का ।

होकर उत्साहित इस प्रतिभा से,
किया आमंत्रित मिसाइल क्षेत्र ने,
अपना कर कुशल तकनीकी,
करी उड़ान सफल पृथ्वी की ।
उस दिन से लेकर आज तक,
अग्नि भी श्रृंखलाबद्ध हो रही ।
मिसाइल क्षेत्र के आगे थी,
शीश हमारा झुका नहीं ।

तेजस्वी मन, अग्नि की उड़ान,
करते क्यों इनका व्यक्तित्व,
मिसाइल मैन ये देश का,
करता जाग्रत आवाम् को
रचकर भारत “20-20” ।

पद्मश्री से भारत रत्न,
अनेक उपाधि एक तरफ,
तो अम्बार विदेशी डिग्रियों का
रचा हुआ है दूसरी तरफ ।
राजनीति से रिश्ते नाते,
नहीं थे कहीं दूर तक,
किया सुशोभित पद इन्होंने,
बन देश का नागरिक प्रथम ।

व्यक्तित्व है इतना सजीव,
उम्र के इस पड़ाव पर भी,
तन और मन से झुका नहीं ।
यह जीवन है इतना कुशल
मानो हिन्दुस्तां की जमीं पर,
मुस्करता हुआ कमल ।

जीवन शैली इनकी,
देती प्रेरणा निस्वार्थ कर्म की,
यदि इरादे हों बुलन्द,
होंसले हों दुरुस्त, तो
नामुमकिन नहीं कुछ भी,
सिर्फ कर्म पथ की राह,
पहुंचायेगी तुझे गंतव्य ।

***

"सारथी"

✍ राहुल गुप्ता, वैज्ञानिक / अभियंता
पीओएसपीडी/ओडीसीजी/एसएनपीए

"कवि इलैक्ट्रॉनिक एवं संचार अभियांत्रिकी में मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर से स्नातक हैं। कवि ने महाविद्यालय एवं कार्यालय स्तर पर विभिन्न हिंदी काव्यपाठ व निबन्ध प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक अपनी रचनाएं पेश की हैं।"

(1)
माँ होती है
बच्चे की पहली पाठशाला,
उसके होठों पे बसते नाम
कृष्ण और कान्हा।
सभ्य पीढ़ी का वर्तमान, इसे मजाक समझ हँसता है;
फैशन की दौड़ में, नाम भी बिट्टू-किट्टू रखता है।

माँ भी आज
बच्चों को नहीं समझती है,
टीवी के नाटकों में तो वो
बेटी की उम्र की लगती है।
नौ माह की पीड़ा भरी मुस्कान,
खुश है सोचकर।
पुत्र तो है हठी, माँ को सारथी बनना ही होगा।
वात्सल्य-रथ पर यह महायुद्ध तो लड़ना ही होगा।

(2)
गुरु का आदर
ज्ञान की उपासना,
सरस्वती को माँ कहकर पुकारना।
एक गुजरे जमाने के किस्से लगते हैं,
अब तो बच्चे,
माँ को भी माँ कहने में झिझकते हैं।
बस्तों में बद मूक किताबें
चिंतित हैं सोचकर,
कि खाली कक्षाओं की भीड़
खुश है कहीं फेसबुक पर।

शिष्य तो है रथी, गुरु को सारथी बनना ही होगा।
ज्ञान-रथ पर यह महासमर तो लड़ना ही होगा।

(3)
पति के चरणों में देवता का वास,
उसके लिए वह महीनों का उपवास।
परंपराएं आज सिर्फ ढकोसले लगती हैं,
जिन्दगी भी अब तो
दो और दो चार की ही अच्छी लगती है।

टूटे परिवारों की वह करूण कथा,
फिर भी बच्चों को आशीष देती
पीछे छूटे उन माँ-बाप की व्यथा।

पति तो है रथी, अर्द्धांगिनी को सारथी बनना ही होगा।
प्रेम-रथ पर यह महायुद्ध तो लड़ना ही होगा।

(4)
सखा कृष्ण के चार चावल खाकर
सुदामा जी रहे कर्ज पर,
गौरव है भारत को
मित्र हेतु भाई से लड़े कर्ण, पर
ये किस्से अब तस्वीरों में ही दिखते हैं,
कुर्सी की खातिर आज, दोस्तों के गले कटते हैं।

कहीं दीवार पर टंगा कर्ण
सोच रहा यह देखकर,
कि कृष्ण खुश है, सुदामा से भेंट कर।

संसार तो है रथी, सखा को सारथी बनना ही होगा।
मित्रता-रथ पर यह महायुद्ध तो लड़ना ही होगा।

(5)
सत्य ही जीत,
न्याय का सम्मान,
परिणाम हो श्रेष्ठ कर्म का,
सार यही है कृष्ण-धर्म का।

ये बातें आज कहानियाँ भर लगती हैं,
गीता भी अब तो उपन्यास लगती है।

कुरूक्षेत्र में खड़े,
मोह में फँसे पार्थ को देखकर,

धनुष उठाती भीष्म की भुजाएं
निश्चित है यह सोचकर।

अर्जुन तो है रथी, कृष्ण को सारथी बनना ही होगा।
सत्य-रथ पर यह महायुद्ध तो लड़ना ही होगा।
(6)
पृथ्वी से परे भी कोई गगन है,
दूर कहीं खिल रहा कोई चमन है।
अतीत में लगती थी
जो मिथ्या कल्पना,

आज वर्तमान के द्वार पर खड़ी
भविष्य की संभावना।

सीमाएँ खुश हैं, आज टूटकर,
भविष्य देख रहा वर्तमान में झाँककर,

तकनीक तो है रथी, इसरो को सारथी बनना ही होगा।
विज्ञान-रथ पर यह महायुद्ध तो लड़ना ही होगा।
(7)
आराम से कटती जिंदगी
और ढेर सारी बचत,
खुशियों के जहाज पर जिन्दगी का सफर।

आज यह दादा-नाना की बीती जवानी लगती है,
आमदनी भी अब तो,
खर्चे से कम लगती है।

गरीबी, भूखमरी, मँहगाई, भ्रष्टाचार,
देश के ही देश पर कर रहे अत्याचार।
सोचते हैं रिश्वतखोरों से भरे,
लज्जित संसदीय बाजार।
जनता तो है रथी, देश हेतु सारथी चुनना ही होगा।
विकास-रथ पर यह महायुद्ध तो लड़ना ही होगा।
(8)
रमजान में राम
और दीवाली में अली,
धर्म गले मिलते रहे,
जहाँ हर गली।
आज वह समाज, जाति रंग पर ही बाँट दिया,
45% आरक्षण के लिए अपनों का सिर काट दिया।
व्यथित है राम और पैगम्बर
इस लड़ती दुनिया को देखकर,
खुश है चौराहे पर खड़ा गाँधी
यह ढाँढ़स बाँधकर।
विविधताएं तो हैं रथी, इंसान को सारथी बनना ही होगा।
एकता-रथ पर यह महायुद्ध तो लड़ना ही होगा।
(9)
एक तो अपनी संगिनी मान,
हर नारी को माँ और बहन का सम्मान।
ये सब अतीत के बिखरे पन्ने लगते हैं,
आज तो बाप भी,
बेटी को बुरी नज़र से देखते हैं।

सूरज से चमकते गाँधी और विवेकानंद,
आज धूमिल लगते हैं,

अंधेरे डिस्को में खड़े जैक्सन और मैडोना,
आज हमारे आदर्श बनते हैं।

विवेकानंद का भाषण,
मौन है सोचकर।
अंधेरा-वर्तमान तो है रथी, सूरज को सारथी बनना ही होगा।
प्रकाश-रथ पर यह महायुद्ध तो लड़ना ही होगा।
(10)
गौतम घर से निकले थे,
करने सत्य की खोज,
यशोधरा और राहुल को पीछे छोड़
सत्य को पाकर बुद्ध बने,
उन गौतम के विचार,
आज मानवता को लग रहे बेकार।

मूर्ख मानव चला यह सोचकर,
परिवार के बंधन तोड़कर,
पा लेगा वह मोक्ष, जीवन-सत्य खोजकर।

सोच रहे लक्ष्मण,
सीता-राम को वन में साथ देखकर।

यशोधरा तो है रथी, बुद्ध को सारथी बनना ही होगा।
निर्वाण-रथ पर यह महायुद्ध तो लड़ना ही होगा।

***

गिल्लू (गिलहरी)

✍ सुनील सिंह, तकनीकी सहायक

एक दिन सुबह-सुबह
पाया पैरों को स्पंदित
आँख खुली तो देखा
एक छोटा जीव,
मेरे पैरों को स्पंदित कर,
चला फुदक कर खिड़की की ओर
देखा तो खिड़की के कोने में
उसने कुछ घास-फूँस के तिनकों से
रखी है अपने नीड़ की नींव
शाम को देखा तो पाया
पूर्ण बने नीड़ को,
हर रोज़ सुबह वह
पैरों को स्पंदित कर देता
एक सुबह मैंने उसके नीड़
को खिड़की के नीचे
रखना चाह, पर
वह डरने वाला जीव
न जाने क्यों अपने
नीड़ के नजदीक
आने लग जाता, जैसे-जैसे
मैं नीड़ के पास जाता
वह नीड़ के नजदीक
आता जाता
परन्तु मैं उसका कारण
समझने में था असमर्थ
और मैंने उसके घर
को खिड़की के नीचे रख दिया
यकायक देखा कि उसने
नीचे रखे नीड़ में जाकर
अपने शायद एक दिन के
बच्चे को मुँह में ले लिया
और पुनः उसे नीड़ में
रखकर, व्याकुल, सहमी,
डरी हुई वह नन्हीं सी जीव
अन्यत्र अपना आशियाना
बनाने लगी।
अब चुना उसने दूसरी
खिड़की का एक कोना।
क्यं न आभास हुआ मुझे?
उस ममता भरी नन्हीं माँ का
जो अपने नन्हें बच्चे के लिए
बार-बार बिना डरे,
आ रही थी नीड़ के पास।
उस दिन के बाद मैंने उसके
क्रिया कलापों पर ध्यान न दिया।
कुछ समय बाद,
जब मैं लौटा,
छुट्टियों के बाद
तो देखा कि वह नन्हीं
माँ अपने छोटे-छोटे
चार बच्चों के साथ
रह रही थी।
तब मैंने सोचा कि हर गहरी
अंधेरी रात के बाद,
उजाले की किरणें, अंधेरे को
दूर भगाती हैं, वैसे ही 'गिलहरी'
के चार बच्चे, किरणों की भाँति
उसके जीवन को उजाले से भर रहे हैं।
और साथ ही सोचा
हम औद्योगीकरण के इस युग में,
बना रहे हैं, अपने-अपने लिए
घर-मकान, कर रहे हैं
पृथ्वी को, वन-उपवन विहीन
परन्तु न सोच रहे हैं
उन नन्हे-नन्हे, निरीह, अबोध
प्राणियों का,
कि वे अपना आशियाना, बनायें तो
बनायें कहाँ? ...

(नीड़ = घोंसला)

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियां : कार्यक्रम-रिपोर्ट

अंतरिक्ष विभाग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार अंतरिक्ष उपयोग केंद्र तथा विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट द्वारा संयुक्त रूप से प्रतिवर्ष तकनीकी हिन्दी सेमिनार का आयोजन किया जाता है। अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में संपन्न सामाजिक विकास के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपयोगी अनुप्रयोगों के विकास एवं प्रदर्शन की जानकारी सरल एवं सहज हिन्दी भाषा में आम जनता तक पहुँचाने के लिए विगत तीन वर्षों से इन सेमिनारों को नया रूप दिया गया। वर्ष 2010 में आयोजित सेमिनार में अहमदाबाद शहर के पब्लिक एवं म्युनिसिपल स्कूल के विद्यार्थियों को शामिल किया गया एवं केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा अत्यंत सरल हिन्दी में अंतरिक्ष क्रिया-कलापों की जानकारी प्रदान की गई ताकि अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति उनकी रूचि बढ़े। वर्ष 2011 में दाहोद नगर में दाहोद जिले के 24 स्कूलों के लगभग 100 विद्यार्थियों के लिए **"भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियां"** नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभिन्न छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा सैक/डेकू-इसरो के इस ज्ञानप्रद पहल की सराहना की गई एवं इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन अत्यंत उपयोगी पाया गया।

इस वर्ष यह प्रयास गुजरात राज्य के बनासकांठा जिले के पालनपुर नगर के विद्यार्थियों के लिए श्री आर.पी.दूबे, ग्रुप निदेशक, पीपीजी, सैक की अध्यक्षता में गठित समिति की देखरेख में किया गया। इस वर्ष कार्यक्रम को और अधिक व्यापक रूप प्रदान करते हुए कार्यक्रम का आयोजन 30 जनवरी 2012 को पालनपुर शहर के के.के.गोठी विद्यालय में किया गया।

कार्यक्रम के भाग के रूप में बनासकांठा जिले के पालनपुर नगर एवं जिले के विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए अंतरिक्ष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। अंतरिक्ष प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री केडिया, आचार्य, के.के.गोठी स्कूल पालनपुर द्वारा रिबन काटकर किया गया।

इस प्रदर्शनी को पालनपुर जिले की 15 स्कूलों के लगभग 3000 से भी अधिक विद्यार्थियों ने देखा। सैक/डेकू के वैज्ञानिकों ने प्रदर्शनी में अंतरिक्ष कार्यक्रमों के विभिन्न पोस्टर, रॉकेट एवं विभिन्न उपग्रहों के मॉडल छात्रों को दिखाए और उन्हें इनकी कार्य प्रणाली और उपयोगों से अवगत कराया तथा इसरो के विभिन्न क्रिया-कलापों एवं अंतरिक्ष विज्ञान की अत्यंत उपयोगी जानकारी छात्रों को अत्यंत सरल एवं सहज भाषा में दी। छात्रों ने काफी रूचि दर्शाते हुए इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं वैज्ञानिकों से अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए सटीक प्रश्न पूछे। यह प्रदर्शनी प्रातः 0900 बजे से अपराह्न 2.30 बजे तक छात्रों के लिए खुली रही।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में पालनपुर जिले के लगभग 15 स्कूलों के विज्ञान संकाय के कक्षा 11 एवं 12 के 300 छात्र-छात्राओं तथा अध्यापकों के लिए ज्ञानोपयोगी भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियां कार्यक्रम का आयोजन के.के.गोठी विद्यालय के मल्टीमीडिया हॉल में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन 1115 बजे किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यालय की छात्राओं ने ईश वंदना की। स्कूल के छात्रों ने स्वागत गीत द्वारा सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री एम.के.रावल, जिला शिक्षा अधिकारी, बनासकांठा, पलानपुर, श्री आर.पी.दुबे, ग्रुप निदेशक, पीपीजी, श्री नीतिन भावसार, ग्रुप प्रधान, सीजीजी, डेकू, ट्रस्टी, के.के.गोठी विद्यालय, प्रधानाचार्य, के.के.गोठी विद्यालय, श्री बी.आर.राजपूत, वरि.हिन्दी अधिकारी, सैक द्वारा दीप प्रज्जवलित करने के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। मुख्य अतिथि श्री एम.के.रावल जी ने अपने संबोधन में कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि इसरो जैसी संस्था द्वारा विद्यार्थियों के लिए इस प्रकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। श्री आर.पी.दुबे जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे ही भारत का भविष्य हैं। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को आगे बढ़ाने और समाज के हित में इसके अनुप्रयोग की जिम्मेदारी नई पीढ़ी पर है। छात्र इस कार्यक्रम का लाभ उठाएं तथा अंतरिक्ष कार्यक्रमों में रूचि लेते हुए इस क्षेत्र में अपना भविष्य उज्जवल करें।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् छात्रों के लिए पॉवर पाइंट प्रस्तुति के माध्यम से दो व्याख्यान, सामान्य विज्ञान तथा अंतरिक्ष विज्ञान से संबंधित जानकारी प्रदान करते हुए कुछ फिल्मों का प्रदर्शन तथा व्याख्यान पर आधारित प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई।

प्रथम व्याख्यान में सैक के वैज्ञानिक श्री हिमांशु शाह ने सैटकॉम, सैटनेव एवं अनुप्रयोग विषय पर छात्रों को अत्यंत ज्ञानप्रद जानकारी प्रदान की गई। व्याख्यान में अत्यंत सरल हिन्दी तथा गुजराती भाषा में श्री हिमांशु जी ने छात्रों को उपग्रह संचार प्रौद्योगिकियों, उपग्रह किस प्रकार कार्य करता है, इन्सैट अनुप्रयोगों, दूर चिकित्सा, एजुसैट के माध्यम से दूर शिक्षा, नौसंचालन सिद्धांत आदि के बारे में जानकारी प्रदान की।

तत्पश्चात् डेकू के निर्माताओं द्वारा इसरो/ अं.वि. द्वारा संचालित एशिया के प्रथम अंतरिक्ष विज्ञान विश्वविद्यालय भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी) पर तैयार किया गया एक वृत्तचित्र छात्रों को दिखाया गया एवं इस कॉलेज में दिए जा रहे शिक्षण के उद्देश्य के बारे में समझाया गया। तत्पश्चात् छात्रों को सामान्य विज्ञान से संबंधित कुछ लघु चित्र - ज्ञान सीरीज़ दिखाई गई।

श्री भगीरथ एन.मांकड़, वैज्ञानिक/अभियंता, सैक ने सुदूर संवेदन एवं अनुप्रयोग विषय पर छात्रों के सम्मुख व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस व्याख्यान के माध्यम से उन्होंने विद्यार्थियों को जानकारी दी कि सुदूर संवेदन का उपयोग किस प्रकार विभिन्न समाजोपयोगी क्षेत्रों में लाभदाई सिद्ध हो रहा है। श्री मांकड़ जी ने अपनी पावर पाइंट प्रस्तुति के माध्यम से छात्रों को सुदूर संवेदन विधि द्वारा फसल उपज अनुमान, नगर संरचना, बंजर भूमि, हिमालय के ग्लेशियरों की स्थिति, मछली क्षेत्रों की पहचान, आपदा प्रबंधन, खोज एवं बचाव, प्राकृतिक संसाधनों की जानकारी के बारे में विस्तार से बताया।

व्याख्यान के पश्चात् छात्रों को डेकू की निर्माता सुश्री सुवर्णा देशपांडे ने "चांद हमारे आगोश में" नामक फिल्म दिखाई। इस फिल्म के द्वारा छात्रों को जानकारी प्रदान की गई कि किस प्रकार चंद्रयान-1 चाँद के बारे में उपयोगी जानकारी प्राप्त करने में सफल रहा है।

अंत में श्री हिमांशु बी.पंड्या, प्रभारी, अंतरिक्ष प्रदर्शनी ने एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम संचालित किया। उन्होंने विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं से उन्हें दी गई जानकारी के आधार पर बारी-बारी से कुछ प्रश्न पूछे। छात्रों ने बड़ी तत्परता के साथ उन प्रश्नों का उत्तर दिया। सही उत्तर देने वाले सभी छात्रों को पुरस्कार के रूप में पेन दी गई।

श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, सैक ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में के.के.गोठी स्कूल के प्रिंसिपल तथा शिक्षकों ने सराहनीय योगदान दिया।

***

अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट में संपन्न तकनीकी हिन्दी संगोष्ठी की रिपोर्ट

अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, अहमदाबाद में दिनांक 27/06/2012 को श्री वी.एस.पलसुले, निदेशक, डेकू की अध्यक्षता में **"भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में स्वदेशी उद्योगों एवं संस्थाओं का योगदान"** विषय पर एकदिवसीय हिन्दी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ.रत्नेश्वर झा, डीन, प्लाज़मा अनुसंधान संस्थान (आईपीआर), गाँधीनगर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। श्री डी.बी.भट्ट, नियंत्रक, सैक/ अध्यक्ष, संगोष्ठी आयोजन समिति, श्री आर.पी.दूबे, समूह निदेशक, पीपीजी, सैक/ अध्यक्ष, मूल्यांकन समिति और श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, सैक/ सचिव, संगोष्ठी आयोजन समिति भी मंच पर आसीन थे।

मंच पर आसीन (दाएं से) श्री आर.पी.दूबे, श्री वी.एस.पलसुले, डॉ.रत्नेश्वर झा, श्री डी.बी.भट्ट और श्री बी.आर.राजपूत

सर्वप्रथम, मंच पर आसीन सभी महानुभावों ने दीप प्रज्ज्वलित किया, तदुपरांत श्री डी.बी.भट्ट ने स्वागत भाषण देते हुए संगोष्ठी के विषय पर अपने संक्षिप्त विचार रखे। श्री आर.पी.दूबे ने संगोष्ठी परिचय देते हुए, संगोष्ठी आयोजन परंपरा और संगोष्ठी के विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। इससे पूर्व, सुश्री देवर्षि ने अपने मधुर स्वरों में प्रभु-वंदना कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष श्री पलसुले जी ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रमों में स्वदेशी उद्योगों की सहभागिता पर प्रकाश डाला और हिन्दी से जुड़े अपने कार्यालयीन अनुभवों पर चर्चा करते हुए राजभाषा का सभी जगहों पर निसंकोच प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि संगोष्ठी में होने वाली परिचर्चा, संबंधित बिन्दुओं को छुएगी और उनके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगी।

उपस्थित श्रोतागण

लेख-संग्रह का विमोचन

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ.झा ने इसरो और अंतरिक्ष विभाग द्वारा भारत में लायी गयी अंतरिक्ष क्रांति की खूब सराहना की और आईपीआर में प्रौद्योगिकी विकास और अंतरण पर चर्चा प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि के कर-कमलों से संगोष्ठी लेख-संग्रह तथा निदेशक, डेकू द्वारा लेख-संग्रह सीडी का विमोचन भी किया गया।

उद्घाटन समारोह के पश्चात्, तकनीकी सत्र का आयोजन तीन भागों में किया गया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री डी.के.दास, उप निदेशक, एसएनपीए और सत्र संचालन श्रीमती रचना पटनायक, प्रधान, पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग एवं श्री सी.एन.लाल, प्रधान, ईक्यूसीडी, द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री कौशिक परीख, उप निदेशक, एसएनएए और सत्र संचालन श्री दिनेश अग्रवाल, प्रधान, ईएफपीडी तथा तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री राजीव ज्योति, समूह निदेशक, एएसजी और सत्र संचालन डॉ.पुनीत स्वरूप, वैज्ञा/अभिएसडी, पीपीजी ने किया। निर्णायक मंडल के रूप श्री आर.के.अरोरा, उप निदेशक, ईएसएसए, श्री सुरिन्दर सिंह, ग्रुप निदेशक, आरएफएसजी और डॉ.सी.एम.किस्तवाल, प्रधान, एएसडी उपस्थित रहे।

उक्त तीन सत्रों में 30 आलेखों की पावर पाइंट प्रस्तुति की गई, सभी लेखकों ने ज्ञानवर्धक और प्रभावपूर्ण प्रस्तुतियां दी, 08 मिनिट की प्रत्येक प्रस्तुति के अंतिम दो मिनिट में प्रश्नकाल भी रखा गया, जिसमें उपस्थित श्रोताओं ने अपने प्रश्न रखे। तीन श्रेष्ठ प्रस्तुतियों के लिए निम्नानुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों की घोषणा की गई।

प्रथम पुरस्कार	श्री पुनीत सिंघवी, वैज्ञानिक सहायक, पीपीजी, डेकू
द्वितीय पुरस्कार	श्री वी.के.जैन, प्रधान, एसएऩपीए-पीओ
तृतीय पुरस्कार	श्री डी.सी.मेहता, वैज्ञा/अभि-एसएफ, ईएसएसए-ईएफएमजी-पीएफडी

कार्यक्रम के अंत में श्री पलसुले जी तथा श्री भट्ट जी ने सभी लेखकों को प्रमाण-पत्र और रु2500/- मानदेय के रूप में प्रदान किए।

प्रथम पुरस्कार-श्री पुनीत सिंघवी

द्वितीय पुरस्कार-श्री वी.के.जैन, और

तृतीय पुरस्कार- श्री डी.सी.मेहता

श्री राजपूत जी ने संगोष्ठी की पूर्व तैयारी के दौरान हुए अनुभवों का उल्लेख करते हुए आभार-ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान श्री सी.एन.लाल, प्रबंधक, आईआईपीएसी/ एसआरए, सैक ने बड़े प्रभावपूर्ण ढ़ंग से मंच संचालन किया।

***

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/ विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट अहमदाबाद में संपन्न

हिंदी माह-2012 की रिपोर्ट

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सैक/ डेकू में दिनांक 01 सितंबर 2012 से 30 सितंबर 2012 तक हिंदी माह का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ किया। माह का उद्घाटन समारोह 03 सितंबर 2012 को श्री विलास पलसुले, निदेशक डेकू की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। डॉ.अंजना अरगड़े, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद मुख्य अभिभाषक के रूप में उपस्थित रहीं। उद्घाटन समारोह में केंद्र के नियंत्रक श्री वी.बी.भट्ट और वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री बी.आर.राजपूत भी मंच पर आसीन थे। हिंदी माह के उद्घाटन समारोह के बाद श्री पलसुले जी ने सैक पुस्तकालय में हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

सभा को संबोधित करते हुए श्री डी.बी.भट्ट जी, मंच पर आसीन (दाएं से) श्री विलास पलसुले जी, डॉ.अंजना अरगड़े जी और श्री बी.आर.राजपूत जी

सैक पुस्तकालय में हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्री वी.एस.पलसुले, निदेशक, डेकू एवं उपस्थित अन्य स्टाफ सदस्य

हिंदी माह के दौरान आयोजित विविध 12 हिंदी प्रतियोगिताओं में केंद्र के 1000 से भी अधिक स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया और साथ ही पहली बार स्टाफ के परिवार (विवाहितियों और बच्चो) के लिए भी हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें सभी ने पूरे उत्साह से भाग लिया।

केंद्रीय विद्यालय-सैक के प्रवेश द्वार पर परिवार सदस्यों के साथ उपस्थित सैक/डेकू स्टाफ सदस्य

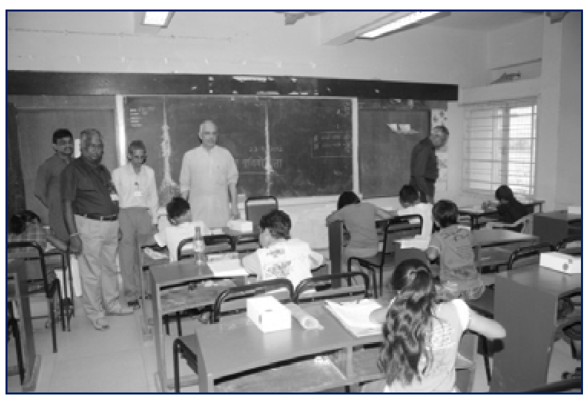

स्टाफ सदस्यों के बच्चों के लिए आयोजत हिंदी प्रतियोगता के दौरान उपस्थित श्री विलास पलसुले जी एवं श्री डी.बी.भट्ट जी

विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नानुसार रहेः-

हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता			
हिरण वारडे			प्रथम पुरस्कार
वेद प्रकाश			द्वितीय पुरस्कार
पंकज परमार			तृतीय पुरस्कार
प्रेसी रोबिन	बीनू नायर	प्रणेश कुमार	सांत्वना पुरस्कार
जगदीशन मुदलियार	गोपाल कृष्णन् नायर	कमलेश कुमार बराया	सांत्वना पुरस्कार

हिंदी आशुलिपि प्रतियोगिता		
पंकज परमार		प्रथम पुरस्कार
रेवती आयंगर		सांत्वना पुरस्कार
हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता		
हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	
अपूर्व बी.प्रजापति	संगीत कुमार मिश्र	प्रथम पुरस्कार
प्रतीक जैन	रंजन परनामी	द्वितीय पुरस्कार
दिलीपकुमार सी.महेता	अभय जैन	तृतीय पुरस्कार
बी.एन.शर्मा	कमलेश कुमार बराया	सांत्वना पुरस्कार
अमिय बिश्वास	राहुल गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
अर्चना डी.भट्ट	दिनेश कुमार अग्रवाल	सांत्वना पुरस्कार
सी.यू. चौहान	प्रणेश कुमार	सांत्वना पुरस्कार
-	ज्ञान सिंह	सांत्वना पुरस्कार
-	संजय कुमार कसोदनिया	सांत्वना पुरस्कार
हिंदी शब्दज्ञान प्रतियोगिता		
हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	
प्रतीक जैन	चंद्रप्रकाश सिंह	प्रथम पुरस्कार
क्षितिज पंड्या	पुरूषोत्तम गुप्ता	द्वितीय पुरस्कार
गीता पटेल	सुगन्ध मिश्रा	तृतीय पुरस्कार
श्वेता किरकिरे	पंकज तिवारी	सांत्वना पुरस्कार
घोणीया डी.एन.	सत्यप्रिय मित्तल	सांत्वना पुरस्कार
बी.एन.शर्मा	भुवनेश्वर सेमवाल	सांत्वना पुरस्कार
हेतल के.पंड्या	रंजन परनामी	सांत्वना पुरस्कार
मनीष वी.पंड्या	दिनेश नौलखा	सांत्वना पुरस्कार
मनीष सोनारा	विशाल अग्रवाल	सांत्वना पुरस्कार
सुजागृति रावल	प्रणेश कुमार	सांत्वना पुरस्कार
अर्चना भट्ट	राहुल गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
जयंतीभाई वणकर	राजेन्द्र सिंह	सांत्वना पुरस्कार
ऋचा चक्रवर्ती	जितेन्द्र कुमार	सांत्वना पुरस्कार
हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता		
हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	
आशीष सोनी	निष्काम जैन	प्रथम पुरस्कार
बी.एन.शर्मा	राहुल निगम	द्वितीय पुरस्कार
उर्वी पोपट	सचिदानंद	तृतीय पुरस्कार
चंपा ठक्कर	सर्वेश्वरप्रसाद व्यास	सांत्वना पुरस्कार
सी.यू.चौहान	निशान्त शुक्ला	सांत्वना पुरस्कार
अमिय बिश्वास	राजेश सिंह	सांत्वना पुरस्कार
मनुभाई परमार	कमलेश कुमार बराया	सांत्वना पुरस्कार
हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता		
हिंदीतर भाषा वर्ग	**हिंदी भाषा वर्ग**	
प्रतीक ए.जैन	मुकेश कुमार मिश्र	प्रथम पुरस्कार
मनीष वी.पंड्या	रंजन परनामी	द्वितीय पुरस्कार
श्वेता किरकिरे	राहुल गुप्ता	तृतीय पुरस्कार
अर्चना डी.भट्ट	पुरूषोत्तम गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
अपूर्व बी.जापतिप्र	सुशांत कुमार	सांत्वना पुरस्कार
हिरण बी.वारडे	जितेन्द्र कुमार	सांत्वना पुरस्कार

पारूल अजमेरा	सत्यप्रिय मित्तल	सांत्वना पुरस्कार
यज्ञेश आर.पटेल	प्रणेश कुमार	सांत्वना पुरस्कार
उष्मा जयंतकुमार सारडा	पंकज श्रीवास्तव	सांत्वना पुरस्कार
उर्वी पोपट	निशांत शुक्ल	सांत्वना पुरस्कार
अमिय बिश्वास	रति सिंह	सांत्वना पुरस्कार
डॉ.के.आर.मुरली	सुनील सिंह कुशवाह	सांत्वना पुरस्कार
नंदिनी देशपांडे	ज्ञान सिंह	सांत्वना पुरस्कार
हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता		
हिन्दीतर भाषी वर्ग	**हिन्दी भाषी वर्ग**	
दिलीपकुमार सी.मेहता	मुकेश कुमार मिश्र	प्रथम पुरस्कार
अर्चना भट्ट	प्रणेश कुमार	द्वितीय पुरस्कार
मुदलियार जगदीशन	सत्यप्रिय मित्तल	तृतीय पुरस्कार
प्रतीक अशोक कुमार जैन	दिनेश कुमार अग्रवाल	सांत्वना पुरस्कार
अपूर्व बी.प्रजापति	कमलेश कुमार बराया	सांत्वना पुरस्कार
आदित्य कुमार वि पतिंगे	जितेन्द्र कुमार	सांत्वना पुरस्कार
सूर्यकांत जे.सोलंकी	अरुण भारद्वाज	सांत्वना पुरस्कार
बी.एन.शर्मा	अजय कुमार सिंह	सांत्वना पुरस्कार
जैमिन बी रामी	अवनीश जैन	सांत्वना पुरस्कार
हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता		
हिन्दीतर भाषी वर्ग	**हिन्दी भाषी वर्ग**	
प्रतीक जैन	अमित शुक्ल	प्रथम पुरस्कार
प्रांतिक चक्रवर्ती	निशांत शुक्ल	द्वितीय पुरस्कार
जैमिन शाह	प्रणेश कुमार	तृतीय पुरस्कार
के.पी.भल्सोड	सर्वेश्वर प्रसाद व्यास	सांत्वना पुरस्कार
उर्वी पोपट	निष्काम जैन	सांत्वना पुरस्कार
जिगर गाँधी	राहुल निगम	सांत्वना पुरस्कार
मुदलियार एम.जगदीशन	राहुल गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
हिरेन पीठवा	दीपक यादव	सांत्वना पुरस्कार
जोली धर	धर्मेंद्र तोमर	सांत्वना पुरस्कार
हिंदी निबंध प्रतियोगिता		
हिन्दीतर भाषी वर्ग	**हिन्दी भाषी वर्ग**	
बी.एन.शर्मा	दिनेश कुमार अग्रवाल	प्रथम पुरस्कार
डॉ.के.आर.मुरली	मुकेश कुमार मिश्र	द्वितीय पुरस्कार
दिलीप कुमार सी.मेहता	अभिषेक शुक्ल	तृतीय पुरस्कार
आदित्य पतंगे	चन्द्र प्रकाश सिंह	सांत्वना पुरस्कार
अमिय बिश्वास	प्रणव कुमार पाण्डेय	सांत्वना पुरस्कार
प्रतीक जैन	रूचि मोदी	सांत्वना पुरस्कार
रंजीत कुमार सारंगी	सर्वेश्वर प्रसाद व्यास	सांत्वना पुरस्कार
मनीष वी.पंडया	अजय कुमार सिंह	सांत्वना पुरस्कार
रवि एन.वाघेला	राम दयाल सिंह	सांत्वना पुरस्कार
हिंदी वर्ग पहेली प्रतियोगिता		
हिन्दीतर भाषी वर्ग	**हिन्दी भाषी वर्ग**	
बी.एन.शर्मा	प्रवीण पाटीदार	प्रथम पुरस्कार
मेहुल आर पण्डया	प्रणव कुमार पाण्डेय	द्वितीय पुरस्कार
क्षितिज पण्डया	सत्यप्रिय मित्तल	तृतीय पुरस्कार
अपूर्व बी.प्रजापति	मुकेश कुमार मिश्र	सांत्वना पुरस्कार
गीता पटेल	सचिन कुमार मौर्य	सांत्वना पुरस्कार

अमिय बिश्वास	जितेन्द्र सिंह	सांत्वना पुरस्कार
दिलीपकुमार सी मेहता	पायल शर्मा	सांत्वना पुरस्कार
अर्चना डी.भट्ट	सर्वेश्वर प्रसाद व्यास	सांत्वना पुरस्कार
हितेश जे कोटेचा	राहुल गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
-	अभिषेक कक्कड़	सांत्वना पुरस्कार
-	राजेश कुमार सिंह	सांत्वना पुरस्कार
-	हिमानी बहुगुणा	सांत्वना पुरस्कार
-	विशाल अग्रवाल	सांत्वना पुरस्कार

हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता

हिन्दीतर भाषी वर्ग	**हिन्दी भाषी वर्ग**	प्रथम पुरस्कार
बी.एन.शर्मा	चंद्रप्रकाश सिंह	द्वितीय पुरस्कार
दिलीप कुमार सी.मेहता	प्रणेश कुमार	तृतीय पुरस्कार
मनीष पंड्या	राहुल गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
उर्वी पोपट	संजय कुमार कसोदनिया	सांत्वना पुरस्कार
अपूर्व बी.प्रजापति	सुखजीत सिंह गिल	सांत्वना पुरस्कार
हिरण बी.वारडे	अजय कुमार सिंह	सांत्वना पुरस्कार
ऋचा चक्रवर्ती	जितेन्द्र कुमार	सांत्वना पुरस्कार
डी.एन.वी.एस.एस.एन.मूर्ति	सर्वेश्वर प्रसाद व्यास	सांत्वना पुरस्कार
विलास वि.जमीनदार	अभय जैन	सांत्वना पुरस्कार

हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता

वाहन चालक वर्ग	**अटेंडेंट वर्ग**	
आर.टी.वेद	निकुंज दवे	प्रथम पुरस्कार
जे.एच.पटेल	बी.एन.वाघेला	द्वितीय पुरस्कार
मनोहर चावड़ा	नितिन बी.दातणिया	तृतीय पुरस्कार
जयेश डी.वोरा	अजय डी.दातणिया	सांत्वना पुरस्कार
दिनेश एस ठाकुर	एम.के.वाघेला	सांत्वना पुरस्कार
	हितेश बी.वाघेला	सांत्वना पुरस्कार
	जशोदा बी.राठोड़	सांत्वना पुरस्कार

हिन्दी प्रश्नमंच

प्रथम पुरस्कार	**द्वितीय पुरस्कार**	**तृतीय पुरस्कार**
संगीत कुमार मिश्र वैभव कुमार उपाध्याय	आदित्यकुमार पतिंगे प्रणेश कुमार	अमर ज्योति शांतनु सिन्हा

प्रोत्साहन पुरस्कार

अनीश आर सक्सेना	अपूर्व बी.प्रजापति	विनोद चौधरी	डी.आर.मिस्त्री
नीलिमा के मंगलवेधकर	निष्काम जैन	अपूर्व वासल	बी.एन.शर्मा
प्रताप एन चौरसिया	श्रीकांत अशोक पाटिल	प्रणव कुमार पाण्डेय	नीलेश धारिया
अमित शुक्ला	परीक्षित पराशर	पी.जे.सोनी	आर.सेंथिलकुमार

श्रोतागण पुरस्कार

नेहा मेहरा	एम.एल.बधेका	कल्पेश बोरसदिया	एस.पी.व्यास	प्रतीक जैन
राहुल गुप्ता	शशिकांत शर्मा	नीरज माथुर	प्रियंका गुप्ता	जितेन्द्र कुमार

केंद्रीय विद्यालय - सैक में कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिंदी आशुभाषण, हिंदी वाद-विवाद, हिंदी श्रुतलेखन तथा हिंदी सुलेखन प्रतियोगिताएं और विक्रमनगर कम्युनिटी हॉल में कर्मचारियों के विवाहितियों के लिए विविध राउंडों में अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

विक्रमनगर कम्युनिटी हॉल में सैक/डेकू के परिवार के सदस्यों के लिए आयोजित हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता

कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों के लिए आयोजित प्रतियोगिता के परिणाम निम्नानुसार रहेः-

हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता			
प्रतिभागी का नाम	**कर्मचारी का नाम**	**वर्ग**	**पुरस्कार**
मास्टर ईशान पटनायक	सुपुत्र श्री सी पटनायक.	कक्षा लिए के 10 व 9	प्रथम
मास्टर ए.एस.चंद्रशेखर	सुपुत्र श्री ए.सुब्बाराव	कक्षा लिए के 10 व 9	द्वितीय
कुमारी दक्षा बोटादरा	सुपुत्री श्री चंद्रकांत बोटादरा	कक्षा लिए के 10 व 9	प्रोत्साहन
हिंदी वादप्रतियोगित विवाद-			
कुमारी रेखा नेगी	सुपुत्री श्री एच.डी.नेगी	कक्षा उच्चतर एवं 11	प्रथम
कुमारी वंदिनी पाठक	सुपुत्री श्री आनंद पाठक	कक्षा उच्चतर एवं 11	द्वितीय
हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता			
कुमारी नेहा बराया	सुपुत्री श्री कमलेश कुमार बराया	कक्षा 8 से 6 तक	प्रथम
कुमारी दिप्ती अग्रवाल	सुपुत्री श्री दिनेश कुमार अग्रवाल	कक्षा तक 8 से 6	द्वितीय
मास्टर चिन्मय सेठ	सुपुत्र श्री हरिश सेठ	कक्षा तक 8 से 6	तृतीय
मास्टर अर्चित व्यास	सुपुत्र श्री एस.पी.व्यास	कक्षा तक 8 से 6	प्रोत्साहन
मास्टर हर्ष सुखेजा	सुपुत्र श्री अनिल सुखेजा	कक्षा तक 8 से 6	प्रोत्साहन
हिंदी सुलेखन प्रतियोगिता			
कुमारी शिवानी प्रजापति	सुपुत्री श्री राधेश्याम प्रजापति	कक्षा तक 5 से 3	प्रथम
मास्टर नेहांश मांकड	सुपुत्र श्री देवांग मांकड	कक्षा तक 5 से 3	द्वितीय
कुमारी अन्विता सिंह	सुपुत्री श्री अरविन्द सिंह	कक्षा तक 5 से 3	तृतीय
मास्टर प्रजय कोटेचा	सुपुत्र श्री हितेष कोटेचा	कक्षा तक 5 से 3	प्रोत्साहन
मास्टर अभिनव पी.एस.	सुपुत्र श्री के.पी.श्रीनिवासन	कक्षा तक 5 से 3	प्रोत्साहन
हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगता			
टीम प्रतियोगिता			
श्रीमती ममता आर्य	पत्नी डॉ.आशुतोष आर्य	विवाहिती	प्रथम
श्रीमती आरती सोनी	पत्नी श्री आशिष सोनी	विवाहिती	
श्रीमती अंकिता शाह	पत्नी श्री जैमिन शाह	विवाहिती	
श्रीमती रेनु मित्तल	पत्नी श्री सत्यप्रिय मित्तल	विवाहिती	
टीम प्रतियोगिता			
श्रीमती शिल्पा मिश्र	पत्नी श्री मुकेश मिश्र	विवाहिती	द्वितीय
श्रीमती तेजिन्दर कौर	पत्नी डॉ.मुंजाल	विवाहिती	
श्रीमती भूमिका तोमर	पत्नी श्री डी.एस.तोमर	विवाहिती	
श्रीमती शबनम भारद्वाज	पत्नी डॉ.भारद्वाज अरूण	विवाहिती	
टीम प्रतियोगिता			
श्रीमती सीमा सिंघल	पत्नी श्री आलोक सिंघल	विवाहिती	तृतीय
श्रीमती लकी पटेल	पत्नी श्री रजनीकांत पटेल	विवाहिती	
श्रीमती संगीता वाघेला	पत्नी श्री बकुल वाघेला	विवाहिती	
श्रीमती पूजा कक्कड	पत्नी श्री अभिषेक कक्कड	विवाहिती	

श्री	विजय जाजल	टीम प्रतियोगिता	पति श्रीमती पारूल जाजल	विवाहिती	सांत्वना
श्रीमती	उपासना कुशवाह		पत्नी श्री सुनील कुशवाह	विवाहिती	
श्रीमती	प्रीति अग्रवाल		पत्नी श्री दिनेश कुमार अग्रवाल	विवाहिती	
श्रीमती	मेनका धाकड़		पत्नी श्री दीनबंधु धाकड़	विवाहिती	
श्रीमती	पायल उमेश कुमार	टीम प्रतियोगिता	पत्नी श्री उमेश कुमार	विवाहिती	सांत्वना
श्रीमती	वर्तिका सिंह		पत्नी श्री सोमेन्द्र प्रताप सिंह	विवाहिती	
श्रीमती	चन्द्रिका प्रजापति		पत्नी श्री ईश्वर प्रजापति	विवाहिती	
श्रीमती	कमला वाघेला		पत्नी श्री बी.बी.वाघेला	विवाहिती	

17 सितंबर 2012 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, सैक (विक्रम हॉल) में हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आ.सी.किरण कुमार, निदेशक, सैक ने की और श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू, श्री डी.बी.भट्ट, नियंत्रक और श्री बी.आर.राजपूत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी भी मंच पर आसीन थे।

सभा को संबोधित करते हुए श्री आ.सी.किरण कुमार जी, मंच पर आसीन (दाएं से) श्री विलास पलसुले जी, श्री डी.बी.भट्ट जी और श्री बी.आर. राजपूत जी

हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री किरण कुमार जी

श्री किरण कुमार ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि भारत में हिंदी और इसरो दोनों की भूमिका देश को जोड़ने की रही है। इसरो ने भारतवासियों को संचार, सूचना और अन्य अनेक अंतरिक्ष से संबंधित कार्यक्रमों के माध्यम से एक साथ जुड़ने के लिए एक प्लेटफार्म दिया है, वहीं पूरी निष्ठा से राजभाषा हिंदी संबंधी अपने संवैधानिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन भी कर रहा है। आगे उन्होंने कहा- “राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार अब एक आंदोलन बन गया है, जिसमें प्रेरणा और प्रोत्साहन की सरकारी नीति के साथ सृजनात्मकता तथा अभिव्यक्ति को भी एक साधन के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। मैं समझता हूँ हिन्दी माह का आयोजन भी इसी आंदोलन का एक हिस्सा है। इस आंदोलन में विरोध और असंतोष नहीं है अपितु हिंदी को और निकटता से जानने की जिज्ञासा और उसका प्रयोग करने का उत्साह और उमंग है।” इस अवसर पर श्री किरण कुमार ने सैक लाइब्रेरी की वेबसाइट के हिंदी संस्करण का विमोचन किया।

इससे पूर्व, श्री विलास पलसुले, निदेशक, डेकू ने सहज बोधगम्य हिंदी के प्रयोग करने पर जोर देते हुए कहा कि हमें हिंदी के अप्रचलित और क्लिष्ट प्रयोगों से बचना चाहिए, तभी हम हिंदी के प्रचार-प्रसार में सफल हो सकते हैं। श्री भट्ट जी ने सैक में चल रही हिंदी गतिविधियों पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि संघ सरकार की प्रेरणा-प्रोत्साहन की नीति के साथ सैक हिंदी के प्रसार के लिए सृजनात्मकता और अभिव्यक्ति की नीति अपना रही है।

श्रीमती नीलू सेठ, हिंदी अधिकारी ने मंच संचालन किया, पुरस्कारों की उद्घोषणा सुश्री रजनी सेठ, वरि.हिंदी अनुवादक, सैक ने की और कार्यक्रम के अंत में श्री सोनू जैन, हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

*****

10 जनवरी 2012 को संपन्न विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित हिंदी प्रतियोगिता की झलक

30 जनवरी 2012 को संपन्न भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियां

सितंबर माह के दौरान संपन्न हिंदी माह - 2012 की झलकियां

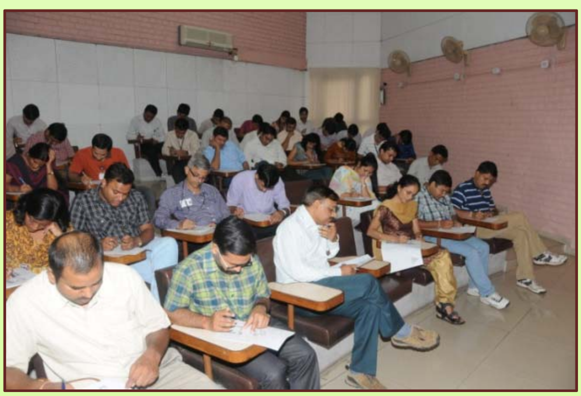

तकनीकी प्रभागों द्वारा किए गए सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कार्य के लिए 26 जनवरी 2012 को दिए गए पुरस्कारों की झलक

वर्ष 2012 के दौरान संपन्न हिंदी कार्यशालाओं की झलकियां